मैं क्यों पूछूँ हे राम मेरे तुम कहाँ मुझे ले जा रहे

मैं क्यों पूछूँ हे राम मेरे, तुम कहाँ मुझे ले जा रहे।
जब तुम ही संग में बैठ के, मुझे प्रीत के गीत सुना रहे।।

मेरा लक्ष्य तू ही है राम मेरे,
मोरे संग जब तुम आये हो।
अन्य क्या तेरे संग में है,
काहे मुझे बतलाये हो।।

जो भी हो सो हुआ करे, तुम को ही तो होता है।
विपरीत भाव प्रिय लगे, वह तुम सों ही तो होता है।।

बिरहन् बन के मैं क्यों रोऊँ,
जब संग में मेरे तुम ही हो।
किसी अरण्य में क्यों खोजूँ,
जब मन में मेरे तुम ही हो।।

'श्रीमद्भगवद्गीता' अध्याय १/२२ - १८.४.१९६०

अनुक्रमणिका

३. साधकों के लिये नया वर्ष
संकलन - सुश्री छोटे माँ

८. जेता कीता तेता नाउ।
विणु नावै नाही को थाउ।
अर्पणा प्रकाशन 'जपुजी साहिब' में से

१४. वह प्रभु का नाम इतना ऊँचा ले जाते हैं कि प्रभु सों भी बड़ा कर देते हैं!
श्रीमती पम्मी महता

१७. शिष्य ने ही देख लो,
अपने गुरु को अमर किया...
अर्पणा 'मुण्डकोपनिषद्' में से

२२. आत्म-समर्पण का महायज्ञ
पितामह - श्री सी. एल. आनन्द

२६. ज्ञान में अहम् जो मिट जाये,
ज्ञान स्वरूप हो जाये है!
अर्पणा प्रकाशन 'प्रज्ञा प्रतिमा' में से

३१. उनका ध्यान नित्य लगा रहता है,
वे समाधि में खो जाते हैं।
अर्पणा प्रकाशन 'श्रीमद्भगवद्गीता - भगवद् बाँसुरी में जीवन धुन' में से

३६. अर्पणा समाचार पत्र

४०. प्रेरणादायक समाधि स्थल के निर्माण में भाग लेने के लिए सभी को एक निमंत्रण...

❖ ❖ ❖

सम्पादक की ओर से

गद्य में प्रस्तुत सभी लेख साधकों के प्रश्नों के उत्तर में परम पूज्य माँ द्वारा प्राप्त सत्संगों पर आधारित हैं और संकलन-कर्ता की निजी समझ के अनुकूल हैं। काव्य की पंक्तियाँ पूज्य माँ के मुखारविंद से प्रवाहित दिव्य प्रवाह का अंश हैं; जिसे सुश्री छोटे माँ ने लेखनी बद्ध किया है। अपनी पूर्ण सामर्थ्य के अनुसार उसे ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुति में किसी भूल के लिये हम क्षमा प्रार्थी हैं।

सम्पादक : *पूनम मलिक*
सह सम्पादक : *श्रीमती साधना पाल*

पता : अर्पणा आश्रम, मधुबन, करनाल
१३२ ०३७, हरियाणा, भारत

श्री हरीश्वर दयाल, अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन, करनाल १३२ ०३७ ०१, हरियाणा द्वारा ९ मार्च २०१५ को प्रकाशित तथा सोना प्रिन्टर प्राईवेट लिमिटेड, एफ -८६/१, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज़-I, नई दिल्ली ११० ०२० द्वारा मुद्रित

साधकों के लिये नया वर्ष

आप सबको नये वर्ष की बहुत बहुत बधाई हो!!

हे भगवान! आज हम सब आपकी शरण में आये हैं, अब पुराने गिले-शिकवे भूल कर नया वर्ष नई उमंग और नई तरंग से आरम्भ करना चाहते हैं।

(अर्पणा मन्दिर में ३१-१२-८९ को पूज्य माँ द्वारा सत्संग पर आधारित)

संकलन - छोटे माँ

प्रश्न : सत्पथ पर चलने के लिये, हम कौन सा पथ लें?

परम पूज्य माँ : गीता के आरम्भ में ही प्रथमोऽध्याय में अर्जुन अपना रथ दोनों सेनाओं के मध्य में खड़ा करने के लिये भगवान जी से प्रार्थना करता है और विपक्ष में अपने नाते और सम्बन्धियों को देख कर उसका मोह जागृत हो जाता है। अर्जुन अपने निहित भाव को छुपा कर ज्ञान बोलने लगता है। भगवान उसकी बातें सुनने के पश्चात् उसे इतना ही कहते हैं कि 'हे अर्जुन! तू तो आत्मा है। मूर्खों जैसी बातें क्यों करता है और छोटी-छोटी बातों के लिये व्यर्थ में क्यों घबरा रहा है। यह व्यवहार तुम्हें शोभा नहीं देता!'

भगवान गुणातीत की बातें करते हुए, भक्तों की बातें करते हुए, 'पूर्ण वह आप ही हैं,' यह दर्शाने लगे। उसके स्तर पर आकर कहने लगे कि साधक के पास तो दैवी गुण होते हैं, परन्तु उन्हें जानने के लिये यह जानना भी ज़रूरी है कि आसुरी गुण क्या हैं।

हमें शास्त्र बहुत अच्छे लगते हैं, उन्हें पढ़ कर हमारा मन बहुत प्रसन्न होता है। हमें ऐसा प्रतीत होने लगता है कि हम विवेकी, ज्ञानी और पण्डित हो गये। ऐसा भ्रम होने लगता है कि हमारे में बहुत भक्ति उठ आई है। तब भगवान कहते हैं कि तू अपने आप को दैवी गुण सम्पन्न समझने लगा है, पहले गुणों की सत्यता समझ ले और सीख ले।

कल नववर्ष है तो फिर क्यों न हम पहले उन गुणों को देख लें और उनसे अपने आप को तोल लें, और आसुरी गुण देख लें। यदि वह हमारे में कम हो गये तो हमें यह पता चल जायेगा कि हम दैवी गुणों की तरफ़ जा रहे हैं...

भगवान कहते हैं, 'हे पार्थ! पाखण्ड, घमण्ड, अभिमान, कठोरता तथा अज्ञानता, यह सब आसुरी गुण हैं।' अब हमें देखना यह चाहिए कि हमारे में पाखण्ड कितना है? हम पाखण्ड को अपने दृष्टिकोण से कैसे देखें?

जीवन में दिनचर्या में वर्तते हुए हम कितनी बातें पाखण्ड से करते हैं। दर्पण में अपना मुखड़ा देखते हैं और उसे सजाते हैं; हमारे आंतर में क्या है, यह देख नहीं पाते। बस दर्पण में अपना मुखड़ा देखकर जहाँ मैला लगता है, वहाँ पर कुछ रंग देते हैं। बाहर जो दिखलाने चलते हैं, वहाँ ख़ुद को सजाते हैं और एक नया रंग लेकर बाहर जग में चल पड़ते हैं। यदि ध्यान से देखें, तो हम कुछ नहीं रंग सके , क्योंकि आंतर के जो भाव थे; जैसे थे, वैसे ही रहे।

यदि आंतर में घमण्ड है, अभिमान है और हम जानते हैं कि

- जिस चीज़ का हम गुमान कर रहे हैं, वह मुझ में नहीं;
- अपने आप को श्रेष्ठ हम माने हैं, परन्तु हम श्रेष्ठ नहीं;
- दूसरे को तड़पाया है, परन्तु हमारे में ग़म नहीं;
- दूसरे को हम न सतायें, हम ऐसे नहीं...

तो हमने किसी के दर्द को देखा नहीं, किसी को जाना नहीं कि वह दुःखी है। हमारा यह जानने का इरादा भी नहीं कि किसी पर क्या गुज़री...

हम तो सारा समय, अपने आप को छुपाने में लगे रहे, किसी को कब देखते? अपने मन में बुरे-बुरे भाव आये, उन्हें ही छुपाने में लगे रहे। किसी को कब देखते? जो भाव खोट भरे आंतर में आये, उनको सत् मान लिया। सो, अब न तो स्वयं अपना मुखड़ा देख सके और न ही अपने को जान सके! ऐसा जीना भी क्या जीना, जहाँ पर केवल मात्र अपने को छुपाते रहे हों। यह सब कुछ होने पर भी, अपना अभिमान ज्यों का त्यों बना रहा...

हमने अपनी न्यूनता को छुपाने के लिये अपना क्रोध बढ़ा रखा है, अपनी अज्ञानता को छुपाने के लिए अपना रूप ज्ञानी का बना रखा है।

इन विपरीत गुणों का जन्म तब होता है, जब हम अपने में किसी प्रकार का अभाव पाते हैं। हमने यह सब छुपाव तो इसलिये किया था कि लोग हमें धन्य कहें... परन्तु जब किसी ने धन्य न कहा, तो क्रोध कर लिया और हाथ में डंडा पकड़ लिया और कहने लगे कि इसको हम तड़पा कर रहेंगे, सता कर रहेंगे और तबाह करके रहेंगे।

जो सबसे लड़ने वाला होता है, वह दुनिया में जाकर मीठी-मीठी बातें करता है। वह किसी न किसी ढंग से अपने को श्रेष्ठ दर्शाना चाहता है। इसको राक्षसी गुण कहते हैं। जो राक्षसी लोग होते हैं, उन्होंने किसी न किसी को पकड़ना होता है। वह यही कहते हैं कि आज मैं किसको खाऊँ? ऐसी राक्षसों की कहानियाँ तो आपने सुनी होंगी कि कैसे वह लोगों को गुमराह करके ले जाते हैं। आसुरी गुण वाले ऐसा ही व्यवहार करते हैं, क्योंकि उन्होंने अपना आसन बनाना होता है। भगवान ने कहा, 'वह असुर पाखण्डी लोग होते है, घमण्डी होते हैं, अभिमानी होते हैं। वह क्रोध करते हैं और अँधे हो जाते हैं। वह अज्ञान से भरे होते हैं तथा राक्षसी सम्पदा से भरे होते हैं।'

राक्षसी लोग यह नहीं जानते हैं कि क्या करना है और क्या नहीं करना? न ही यह प्रवृत्ति जानते हैं। उन्होंने तो केवलमात्र वही करना है जो उनके मन भाये। उनका मन दम्भ और अभिमान से भरा है। उसमें न्यूनता इतनी बढ़ गई है कि केवल अंधकार ही अंधकार है। ऐसे लोग, कर्त्तव्य क्या है और अकर्त्तव्य क्या है; हमें क्या करना चाहिये, क्या नहीं करना चाहिए; हम उचित कर रहे हैं या अनुचित, यह नहीं समझ सकते।

उनका क्रोध अज्ञान से परिपूर्ण है। उसी में दृढ़ता है, उसमें कठोरता को ही वह पौरुष समझते हैं। जिसका ऐसा दृष्टिकोण है, वह कर्त्तव्य को क्या समझेगा? वह उचित और अनुचित का भेद क्या जानेगा?

इसी दृष्टिकोण को सम्मुख धर कर, आज क्यों नहीं कहते अब मैंने देखना है कि मेरा कर्त्तव्य क्या है? उसमें उचित क्या है, और अनुचित क्या है? क्या मैं उचित देखकर बात करता हूँ? आज जीवन का एक वर्ष और बीत गया, आज मैं हिसाब कर ही लूँ, अतः मैं देख लूँ:

- कितनी बातें मैंने उचित और अनुचित के विषय में सोच कर करीं?
- कितनी बातें मैंने कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य के विषय में सोचकर करीं?
- कितनी बातें मैंने कुल की लाज रखते हुए करीं?
- कितनी बातें मैंने गुमान और दम्भ के चरण चढ़ा दी हैं?

ऐसे दृष्टिकोण से ही नववर्ष का प्रथम दिन सुन्दर, उज्जवल व निष्काम होगा तथा पावन और प्रकाशमय होगा। यदि पुराने भाव, गिले-शिकवे ही साथ ले गये, तो कौन सा नया साल? और कौन सी नई ख़ुशी आ सकेगी? तब तो कोई लाभ न होगा...

हम मूर्खों की भाँति अपनी ख़ुशी को तबाह करते रहते हैं, हर जगह पर अपना झंडा गाढ़ना चाहते हैं।

- यदि हम यह समझें कि किसी ने हमारी ख़ुशी छीन ली, तो यह नहीं बनता।
- किसी ने हमें तबाह कर दिया, तो यह नहीं बनता।
- यदि धंधा ख़राब हो गया तो सब प्रारब्ध से हुआ, सो यह किसी का दोष नहीं।
- यदि किसी ने गाली दी और आप दुःखी हो गये; तो उसने तो केवल वाक्

ही बोला था, आप क्यों दुःखी हो गये? उसके मुख से तो केवल वायु ही निकली थी, वह तो आप तक पहुँची भी नहीं।

हम दम्भी, अभिमानी और क्रोधी हैं, अपने को ऊँचा समझे बैठे हैं, अज्ञान के शिकार हैं। हमारे आंतर कई ऐसी त्रुटियाँ आ गई हैं, जिनके कारण हमारे पास सहन शक्ति नहीं है। जैसे स्वास्थ्य ख़राब हो तो हर प्रकार के किटाणु घेर लेते हैं, इसी प्रकार आंतर में इन विकारों के कारण हमें दुःखों ने घेर रखा है।

परम पूज्य माँ के साथ पूज्य छोटे माँ

आज के दिन हमें देखना है कि -

- अपने लिये तो हम छोटी-छोटी बात पर दुःखी हो जाते हैं, परन्तु दूसरे को हमने क्या कहा, इसके विषय में हम पत्थर हैं।
- हमारे लिये अपना काम ही ख़त्म नहीं होता, तो हम दूसरे की सहायता क्या करेंगे?
- यदि दूसरे ने कहा कि हमने ग़लत किया है, तो हम बीमार हो जायेंगे।
- वास्तव में बिन सोचे समझे हमने भिखारी का कासा अपने पास रखा हुआ है और द्वार द्वार पर भिक्षा माँगते हैं।

मन यही कहता है - 'औरों के बारे में यदि कोई झूठ भी कहे, तो मुझे पसंद है। परन्तु यदि मेरे विषय में सच बोलो, तो मैं भड़क जाऊँगा। मैं क्रोध में आकर तुम्हें तबाह भी कर सकता हूँ। सो, तुम मेरे बारे में सच न बोलना। यदि मैं सबका मान हर लूँ, तो भी तुम कहना मैं बहुत मान करता हूँ। मेरे हर प्रहार को तुम भगवान की कृपा मानना।' यह तो मेरा

व्यवहार है दूसरों के साथ!

अब आई मेरी बात... 'यदि कोई विपरीत बात करेगा तो मैं मार डालूँगा!

आपकी इतनी हिम्मत कि आप मेरे सामने खड़े हो सकें!

आपने मेरी सच्ची बात कर दी है, मैं आपको दुनिया में न रहने दूँगा।

मैं आपकी ऐसी कहानियाँ बनाऊँगा कि आपको कहीं पानी न मिले।'

सो, आसुरी वृत्ति के प्रहार इस प्रकार दूसरे को तबाह कर देते हैं।

हमने यह देखना है कि

- हमने कहीं ग़लती से किसी पर दाग़ तो नहीं लगा दिया?
- कहीं ग़लती से यह तो नहीं कह दिया कि हम अधिक लायक हैं और आप नालायक हैं?
- कहीं अपना कर्त्तव्य तो नहीं छोड़ दिया?
- किसी को अपमानित तो नहीं कर दिया?
- किसी को ढकना था, उसे गिरा तो नहीं दिया?

सो भगवान से यही माँगो, रक्षमाम्!

इस वर्ष हम माँगें क्या? आज नये वर्ष के लिये हम माँगेंगे क्या? क्या हम यह चाह रहे हैं कि अपनी ग़लतियां भुला कर आयें? यदि ऐसा हुआ तो यह फिर से उमड़ आयेंगी अगले वर्ष के लिये...

क्यों न कहें कि 'हे भगवान, मैं भूली। मेरे से अनेक बार ग़लती हो गई। मैंने देखा नहीं, मैंने जाना नहीं। मैंने भूले से ऐसी बात कह दी। मैंने अनेकों का मान हर लिया। मैं उनकी भूख मिटा सकती थी, मैंने नहीं मिटाई। मैं किसी को पानी पिला सकती थी, मैंने नहीं पिलाया। जब मैंने देखा कोई सर्दी से काँप रहा था, मैं कुछ तो कर सकती थी, मैंने नहीं किया!'

हे भगवान! इस बार मुझे क्षमा कर दो! ऐसी ग़लती फिर कभी न होगी। आज से मुझे जो भी मिलेगा, वह मुदित होगा। उसके लिये ख़ुशी बरसेगी! हम उसी का होकर जीयेंगे!

तो क्यों न हम इस पल से ऐसी प्रार्थना करने की तैयारी कर लें? शायद इस पल ऐसा प्रश्न ही इसीलिये उठा है।

गीता के सोलहवें अध्याय में भगवान ने आसुरी गुणों का वर्णन बहुत विस्तार से किया है। ऐसी बातें सुनकर चोट तो लगती है। परन्तु साधक, सत्य प्रिय गण और जो इन्सान बनना चाहते हैं, वह यही जानना चाहेंगे कि हमारी साधना में कहाँ कमी रह गई? हमने सत्य कहाँ छोड़ा? साधक तो केवल भगवान को चाहता है। वह यह देखता है कि भगवान कहाँ पर आयेंगे, क्योंकि न मैं इन्सान हूँ और न सत्य प्रिय... ❖

जेता कीता तेता नाउ।
विणु नावै नाही को थाउ।

गतांक से आगे - (अर्पणा प्रकाशन 'जपुजी साहिब' में से)

पौड़ी १९

असंख नाव असंख थाव।
अगंम अगंम असंख लोअ।
असंख कहहि सिरि भारु होइ।
अखरी नामु अखरी सालाह।
अखरी गिआनु गीत गुण गाह।
अखरी लिखणु बोलणु बाणि।

अखरा सिरि संजोगु वखाणि।
जिनि एहि लिखे तिसु सिरि नाहि।
जिव फुरमाए तिव तिव पाहि।
जेता कीता तेता नाउ।
विणु नावै नाही को थाउ।
कुदरति कवण कहा वीचारु।
वारिआ न जावा ऐक बार।
जो तुधु भावै साई भलीकार।
तू सदा सलामति निरंकार।।१९।।

शब्दार्थ : (उस मालिक के) अनेक नाम हैं और अनेक स्थान हैं। (जीव की) पहुँच से परे, दूर से दूर अनेक लोक हैं। 'असंख्य हैं', यह कहने से भी सिर पर भार होता है। अक्षरों द्वारा नाम (लिया जाता है), अक्षरों द्वारा प्रंशसा होती है, अक्षरों (भाषा) द्वारा ही ज्ञान, गीत और गुण गाये जाते हैं। अक्षरों (भाषा) द्वारा (गुरु) बाणी का लिखना और बोलना होता है। अक्षरों का सिर के साथ सम्बन्ध कहा गया है। परन्तु जिसने यह अक्षर लिखे हैं, उसके सिर पर (यह अक्षर आश्रित) नहीं हैं (अर्थात् उसकी बुद्धि पर आधारित नहीं हैं)। जैसे वह (मालिक) आज्ञा करता है, वैसे वैसे (ही हम जीवन में परिस्थितियाँ) पाते हैं। जितना (उसने) जगत रचा है, उतना (उसका) नाम है। नाम के बिना कोई स्थान नहीं (अर्थात् नाम के बिना साधक का कोई आसरा नहीं)। किस शक्ति से मैं उसका विचार करूँ? मैं तो एक बार भी (अपने स्वामी के) बलिहारी नहीं जा सकता। (हे मेरे मालिक!) जो तुम्हें अच्छा लगे, वही काम अच्छा है। हे निरंकार! तू सदा ही स्थिर है।

पूज्य माँ :

मालिक के हैं नाम अनेक, उस मालिक के धाम अनेक।
अगम अगोचर तत्व के, जान मना हैं लोक अनेक।।१।।

असंख्य कही के सुन मना, सीस पे बोझ यह नहीं उठा।
असंख्य कही के सुन मना, पल पल तू अब झुकता जा।।२।।

नाम लेई के हे मना, शब्द नाम में न ठहरा।
जीवन जानो नाम से, अपना तू अब दे भरा।।३।।

अनेक नाम मेरे मालिक के...
अनेक धाम मेरे मालिक के...

है शब्द नाम है शब्द बड़ा ही, है शब्द ज्ञान गीत गुण गाई।
है शब्द भाषा है नाम लिखाई, है शब्द रेखा जित जीवन समाई।।४।।

जीवन परे वह मेरा साईं, जिस सब की रेखा बनाई।
जैसा फ़रमाये वह गोसाईं, सबने वैसी ही तो पाई।।५।।

जो भी किया जहाँ भी किया, पूर्ण है बस उसका नाम।
बिन नाम के जान ओ मेरे मना, अखिल लोक में नहीं है स्थान।।६।।

पूर्ण प्रकृति उसकी देखी, लीला सारी देख ली।
यह विस्तार है नाम की, आज तो सारी देख ली।।७।।

विचार में वह सब न आये, बखान हो ही न पाये।
बलि बलि जाऊँ चरणन् के, 'मैं' चरणी न चढ़ पाये।।८।।

कहे सरकार मेरा सरताज, वह करे जो उसको भाये।
हुक्म मना तू मालिक का, तब ही चैना आ जाये।।९।।

वह एक आधार वह मालिका, नित सलामत निरंकार।
अव्यय अविनाशी है वह, वह ही है बस ओंकार।।१०।।

जो हुक्म मनाये तक़दीरपति ने, जो कहा अब वह ही करें।
जो मिले जब भी मिले, सीस चरण में हम धरें।।११।।

मन में विरोध मन में क्रोध, मन में भाव बुरे नहीं उठें।
दुःख पल में पूर्ण विनशें, गर चरणन् में हम सीस धरें।।१२।।

वह कहें यहाँ बार बार, वा चरण में सीस धरो।
जो करे करे मालिक मेरा, हर पल उसका नाम ही लो।।१३।।
हर पल उसका नाम ही लो...

नाम तेरा इक शब्द कहो, शब्द में बड़ाई भरी हुई।
भाषा वाक् शब्द कहो, लिखाई में शब्द है भरी हुई।।१४।।

ज्ञान को भी शब्द कहो, गीत गुण शब्द में भरी हुई।
जो भी बात जहाँ भी हो, पूरी शब्द में भरी हुई।।१५।।

पर शब्द नाम तुम्हारा है, जो भी शब्द जहाँ कही।
हर स्थान ये रूप रंग, शब्द मात्र ही रह गई।।१६।।

शब्द बिना कोई स्थान नहीं, शब्द बिना कोई नाम नहीं।
शब्द बिना कोई रूप नहीं, शब्द बिना कोई ज्ञान नहीं।।१७।।

पर केवल शब्द तू ही है, शब्द केवल तेरा है।
क्यों न कहें मेरे मालिका, बस तेरा चरण ही मेरा है।।१८।।

यह 'मैं' चरण में जाये टिके, वा को अपना ही तू ले।
तूने कहा सब तेरा है, यह मेरा जो है तू ले ले।।१९।।

मैं मैं करके मेरा करके, मैंने जो अपनाया है।
तेरा है तू ही वह ले, तेरे दर पे मैं आया है।।२०।।

तुझे तेरा देने आया है, बलि कोई न दे सके।
मैं तुझे क्या गुरु अज दूँ, तेरा ही तुझको दे रहे।।२१।।

कोई बलि इसमें नहीं, सत्य पथ यह जाने हैं।
सब तेरा है वहाँ 'मैं' नहीं, आज तुझी से जाने हैं।।२२।।

कौन बलि हम दे सकें, कुछ पास नहीं तुझको क्या दें।
चोरवत् करी चोरी तेरी, क्यों न चोरी छोड़ दें।।२३।।

सीनाज़ोरी तुमसे करी, यह सीनाज़ोरी छोड़ दें।
यह मन यह बुद्धि तेरी, यह तिजोरी छोड़ दें।।२४।।

जो भी मैं यह आज है, वह तेरी तुझपे छोड़ दे।
यही कहे तू मालिका, बार बार तू ही कहे।।२५।।

सब तू है तेरा ही तो है, हज़ार बार तू कहे।
कुछ समझ पड़ी कुछ नहीं पड़ी, दर पे खड़ी मन यही कहे।।२६।।

समझ पड़ी या नहीं पड़ी, जो तेरी है वह तो तू ले ले।
चोरी की आदत है बुरी, यह मजबूरी मेरी तू हर ले।।२७।।

मेरे नानका! मालिका, इतनी तू कृपा कर दे...

वह यह कहे जा रहे हैं! उसके विस्तार का, उसकी प्रकृति का, उसके संसार का हम क्या बयान करें? पूर्ण उसका है, उसी का नाम है, उसी का गान है, उसी की महिमा है, उसमें हम व्यर्थ में 'मैं' भर कर उसकी चोरी कर रहे हैं। गर हमने चोरी छोड़ दी तो क्या बलि दी? यह तन, जो उसका है, गर उसको दे दिया, तो क्या दिया? हम रोज़ कहते हैं, 'तेरा तुझको देते हुए, क्या लागे है मोर!'

हे नानका! आज यह बात सच कर दे। यह तेरा है, तू ही है, यह समझा रहे हो, बता रहे हो! तुम ही तो यह पथ सुझा रहे हो, तुम ही तो बार-बार बुला रहे हो। मैं ही अज्ञानी हूँ, अँधियारे में बैठी हूँ! जाने क्यों, जो मेरा नहीं, उसे पकड़े बैठी हूँ। कोई विधि कहो!

कोई विधि कहो कोई विधि करो, तेरा तुझपे छोड़ दूँ।
जो मेरा नहीं यह रोम रोम, इससे अज नाता तोड़ दूँ।।१।।

तू कहे तू स्वयं कहे, तू आप कहे मैं मान लूँ।
तू सच कहे मेरे मालिका, तेरा सच्चा वाक् मैं जान लूँ।।२।।

इस कारण पुनि पुनि कहूँ, अज पुनि तेरे शरण पड़ूँ।
'मैं' शरणा में गर ले लो, तो पल में तेरा छोड़ दूँ।।३।।

इस 'मैं' को एक आधार की, जन्म जन्म की आदत पड़ी।
इस कारण इस चोरी में, इस 'मैं' की यह हालत हुई।।४।।

हे रहमदिल परवरदिगार, तुझे कहूँ मैं पुकार पुकार।
इक बेरी इस 'मैं' को निहार, इक बेरी इस 'मैं' को पुकार।।५।।

तेरे चरण में खो जाएगी, पल में चरण में सो जाएगी।
तन मन बुद्धि तेरी है, इससे दूर यह हो जाएगी।।६।।

मैं रही है तुझे पुकार, ख़ुदी को जान के रही पुकार।
चोरी करे और करे पुकार, चोरी से अब मुझे उभार।।७।।

ओ नानका! मेरे नानका! ओ नानका, मेरे नानका.....

आधार इसलिये माँग रहे हैं और चरणों का आधार माँग रहे हैं, क्योंकि 'मैं' को जन्म जन्म की आदत है कि वह किसी चीज़ पर लिपट जाती है। इसे नाम का आधार, चरणों का आधार चाहिये।

जन्म जन्म की आदत 'मैं' की, कहीं पे यह लिपटाये है।
बिन लिपटे यह 'मैं' मेरी, ज़िन्दा भी रह नहीं पाये है।।१।।

गर चरण तेरे मिल जायें, और मन मेरी इन्हें चाहे है।
इक बेरी 'मैं' वहाँ लिपट गई, स्वतन्त्र तन हो जाये है।।२।।

बिन 'मैं' के यह तन होगा, आवाहन तेरा हो जाये है।
'मैं' सोई होगी चरणन् में, सब नानक का हो जाये है।।३।।

गर 'मैं' वहाँ पे ठारी हो, भगवान को आने न देगी।
गर 'मैं' का राज्य वहाँ पे हो, भगवान नज़र भी कहाँ होगी।।४।।

गर 'मैं' की नज़र कुछ पल को बंद, नानक मेरे हो जाये।
कुछ पल को सही तेरे चरण में आ, कुछ घड़ियों को सो जाये।।५।।

तो आके अपना ले जाना, मेरा नामोनिशान न रह पाये।
वहाँ तेरा नाम ही हो जाये, वहाँ मेरा नाम नहीं रह पाये।।६।।

पर यदि तुमने ऐसा जादू न किया, तो मेरे मालिका! सच्चे बादशाह! यह कैसे होगा? वह कह रहे हैं, 'बलि तो तुम क्या चढ़ाओगी, मेरी ही चीज़ वापिस कर दे।'

आज यही बिनती करती हूँ मालिक, मुझसे यह होता नहीं! इस 'मैं' को दो पल चरणों में सोने दो, दो पल दूर होने दो, फिर आहिस्ता से इसे खिसका लेना, ताकि वापिस ही न आये। बस यही तरीक़ा है। तुम बार-बार मुझे कह रहे हो। मैं बार-बार हाथ जोड़ कर तुझे कह रही हूँ और तुम मुझे कह रहे हो। तेरी अपार कृपा होगी, करुणा होगी,

गर 'मैं' को चरण में ले लो, इस 'मैं' को शरण में खोने दो।
कुछ पल ख़ुदी को भूले ये, जिसका है तन उसका होने दो।।१।।

गर 'मैं' कुछ कुछ सो गई, गर सच ही तुझमें खो गई।
तेरा कुछ नहीं जायेगा, 'मैं' तो धूलि हो गई।।२।।

चोरी ख़त्म हो जायेगी, बाक़ी तेरी रज़ा रह जायेगी।
वही करेगी तन तेरी, जो बात तुझको भाएगी।।३।।

जब 'मैं' की रोक टोक गई, मन भी मौन हो जायेगी।
मन तो आगे ही तेरी है, वह 'मैं' की मान कब पायेगी।।४।।

तू यही कहे मुझे नानका, तू यही कहे है बार बार।
'मैं' भी चरण में सीस धरे, अज यही कहे है बार बार।।५।।

बस इक करुणा की नज़र तेरी, नानका मुझको मिल जाये।
'मैं' चरण में जाये मिटे, तेरा तुझको मिल जाये।।६।।

'मैं' की बात कहीं रहे नहीं, तुझको यह दिल मिल जाये।
न 'मैं' रहे न 'तू' रहे, मौन में परम भी मिल जाये।।७।।

गर करुणापति तू करुणा करे, तब ही तो यह सब हो पाये।
हे दयानिधि हे मेहरबान, हे दरियादिल तू कर पाये।।८।।

क्रमशः

वह प्रभु का नाम इतना ऊँचा ले जाते हैं कि प्रभु सों भी बड़ा कर देते हैं!

श्रीमती पम्मी महता

परम पूज्य माँ के साथ श्रीमती पम्मी महता एवं अर्पणा के अन्य सदस्य

कुछ अन्य संस्मरण -

कितना अदब, कितनी तहज़ीब है उस ज़िन्दगी में! कितना समदर्शी है वह, किसी को त्याग देना तो उनकी फ़ितरत ही नहीं। वह भगवान के गुणों से किस हद तक प्यार करते हैं कि उसकी कोई हद ही नहीं। हम भगवान का नाम कुछ छुपाने के लिए लेते हैं, मगर वह प्रभु का नाम इतना ऊँचा ले जाते हैं कि प्रभु सों भी बड़ा कर देते हैं!

इस तरह मन, उन प्रभु की अपने जीवन में चली फिल्म को दोहरा रहा था! उनकी वफ़ा, करुणा, क्षमा, त्याग, वैराग्य सभी सामने आते ही चले जा रहे थे और मैं नतमस्तक उन चरणों में बैठी निहारे ही चले जा रही थी!

प्रभु के गुणों से ही हमारा प्यार, वास्तविक प्यार है। बाक़ी प्यार सिर्फ़ ख़ुद से है। उस दीन-बन्धु की क्या कहूँ? मुझ जैसी दीन-हीन को उठाने को जन्म लेने वाले, तुझे कोटि-कोटि प्रणाम मेरा! हे मंगलकारी जगत के पालनकर्त्ता, तुझे शत्-शत् प्रणाम मेरा!

इतना साधारण जीवन जी कर भी सत्य को प्रमाणित करते जाते हैं। जीवन में इन गुणों को कैसे लाया जाता है, वह स्वयं प्रमाणित करते हैं। वह स्वयं विधि हैं। वह, वह रहगुज़र हैं जिस पर स्वयं चल कर अपने क़दमों के निशान छोड़ते हैं ताकि उसे कर पाये हर कोई! बेहद आकर्षण है इस जीवन में! चुम्बक की तरह आपको खेंचने की कशिश है इन में... और खेंच कर निरन्तर लिये जाते हैं...

उनका जीवन जिसे स्वयं प्रमाणित करता है उसे ही आदर्श माना जा सकता है। उसके प्रति ही सीस झुक सकता है। उसी से जीवन में श्रद्धा उत्पन्न हो सकती है क्योंकि उनके क़दमों ने वह रहगुज़र बनाई होती है। उस रहगुज़र को लाखों सलाम मेरे! तुझे दण्डवत् प्रणाम मेरे!!

वह क्या उनका तो तस्सवुर भी वफ़ादार है

हर याद दिल में उतर के ठहर जाती है

धीरे-धीरे दस्तक देती है दिल पे जब

आपकी वफ़ा की याद यकसाँ उभर के आती है...

और क्या कहें वफ़ा को उनकी

किस क़दर काँटों पे चला के हमने इस वफ़ा को आज़माया है...

हम कहाँ दे पाये हैं ऐसी वफ़ा, हमें तो बस लेना ही आया है... ख़ुदा का करम रहे जो इस राहेवफ़ा सों वफ़ादार हो सकें। कहते हैं, उनकी वफ़ादारी देख हम जैसे ख़ुद-बख़ुद बदल जाते हैं। शायद ज़िन्दगी उस बावफ़ा से कभी वफ़ादार हो जाये इस क़दर... यारब्ब, आपके क़दमों में यही अर्ज़ लिये हूँ! ऐसो ही हो जाये!

पूज्य मईय्या के परम पुनीत ज्ञान की हर पराकाष्ठा उनके जीवन में ढली हुई है। नमो नमो कहते हुए आनन्द का अनुभव होता है। इसकी सत्यता इतनी है कि इसे जीवन से बोलना होगा... इससे कम ज्ञान कोई मायना नहीं रखता, क्योंकि ज्ञान और जीवन ही एकाकार हो सकते हैं। इनका समन्वय अनिवार्य है। ज्ञान वाणी से बोला नहीं जाता, जीवन इसे प्रमाणित करके बोलता है। इस सत्य को माँ ने सिद्ध कर दिया है। तू धन्य है मईय्या और धन्य है तेरी हर देन!

सरेशाम जलता है कोई, रोशनी पाता है कोई

सिर्फ़ तू ही निभाता है, नहीं निभाता और कोई

किस क़दर निबाह करते हैं, मुझ गुनहगार के साथ

हर रिश्ते से उठ के न जाने, कौनसा रिश्ता निभाता है कोई

यह सभी देख कृतज्ञता सों भर सी जाती हूँ! प्यार से सराबोर हो जाती हूँ!

हुज़ूर के क़दमों का सदक़ा उतारती हूँ और उतार कर बार-बार उतारती हूँ! ख़ुदा करे इन क़दमों की चाकरी कर पाऊँ! आपका ज्ञान जो मैंने प्रवाहित होते देखा है वह इस आंतर में बस कर बह जाये... इस सर्वश्रेष्ठ ज्ञान को हृदय सों स्वीकार करी विनम्र नमन कर पाऊँ... हे मेरे परवरदिगार, इस जीवन में बस कर बह जाईये - यही सच्चे साहिब के क़दमों में इल्तिजा है मेरी! नितांत मौन होई, इसे, जो आंतर में आ चुका है उस ज्ञान को, विज्ञान में परिणत होता देख पाऊँ! हे प्रभु जी, आप मेरी आस हो, मेरा प्यार हो उस प्यार पे क़ुरबान हो सकूँ!

आपका हर रूप में, हर पहलू में बहुत हसीन साथ रहा। हे मेरे अपने आप, वह जो आपने मुझसे दूर खड़े हो कर मुझे उस अपने आप के दर्शन दिये हैं, हे नाथ, आईये रल जाईये मुझ अपने आप में, जो एकाकार हो पायें! आप ही आप बस सर्वत्र आप ही रह जायें। ऐसो ही प्रभु जी आपको तिलक कर पाऊँ, आपके शरणापन्न हो सकूँ। जैसे यहाँ तक आप स्वयं इसे लाये हैं, अब आगे के क़दम भी ख़ुदा करे, आपके हों! आपकी मुकम्मल ज़िन्दगी का सदक़ा उतारती हूँ। उन्हीं क़दमों में अर्ज़ करती हूँ... आईये, अपनी कनीज़ के हृदय से प्रवाहित हो जाईये।

आपने अपनी बहुत ही मीठी, बहुत ही प्यारी व सुन्दर याद व उन यादों का जो सिलसिला दिया है; इस रूप में जो आशीर्वाद दिया है, उसी आशीर्वाद को पाया जब महसूस करती हूँ तो झुकती ही चली जाती हूँ। आपके चरण ही धारण किये रहती हूँ हर पल, हर दिन! आपके क़दम ही तो संसार बन गया है मेरा! जब सारी वृतियाँ एक ही वृति पे उतर अपने प्रभु सों लिव लगा लेती हैं तो हृदय सरस व स्नेहासक्त हुआ अपने में आनन्द का अनुभव करता है। आपकी सुन्दरता को आश्चर्यचकित सी निहारे ही चले जाती हूँ... ❖

शिष्य ने ही देख लो,

अपने गुरु को अमर किया...

- मुण्डकोपनिषद्

प्रथम मुण्डक - प्रथम खण्ड

अथर्वणे यां प्रवदेत ब्रह्माथर्वा तां पुरोवाचाङ्गिरे ब्रह्मविद्याम्।
स भारद्वाजाय सत्यवहाय प्राह भारद्वाजोऽङ्गिरसे परावराम्।।२।।

शब्दार्थः

विख्यात है (कि); शौनक नाम से प्रसिद्ध मुनि; जो अति वृहत् विद्यालय (ऋषिकुल) के अधिष्ठाता थे, शास्त्र विधि के अनुसार; महर्षि अङ्गिरा के पास आये (और उनसे); (विनयपूर्वक) पूछा; भगवन्!; निश्चय पूर्वक; किसके जान लिये जाने पर; यह; सब कुछ; जाना हुआ; हो जाता है; यह; (मेरा प्रश्न है)।

तत्व विस्तारः

गुरु परम्परा की कहें, किस विध किसको ज्ञान मिला।
परम ब्रह्म ने कह आये, ब्रह्म को यह ज्ञान दिया।।१।।

स्वयंभू आप ही ब्रह्मा भये, ज्ञान स्वरूप वह आप ही रे।
निराकार अव्यक्त तत्व, अखण्ड रचना को आये।।२।।

उपाधि रहित रे जान ले, उपाधि धारण कर आये।
नाम रहित अखण्ड रस, जग धारण रे कर आये।।३।।

वह गुणातीत वह महा मौन, ईश्वर रूप में आ गये।
संस्कार वह लिये हुये, ब्रह्मा रूप में आ गये।।४।।

ज्ञान स्वरूप वह आप ही हैं, सर्व रचयिता बन आये।
परम चेतना सत्त्व रूप, सर्व नियन्ता बन आये।।५।।

सर्वाधार ईषण कर्ता, ईषणकर रे बन आये।
प्रथम नाम रे यहीं लिया, भाव रूप वह बन आये।।६।।

ब्रह्मा पुत्र अथर्व रे थे, देख यहाँ पर कहते हैं।
ज्ञान उन्हीं को सब रे दिया, ऋषि यहाँ पर कहते हैं।।७।।

अंगिरा को वा ने दिया, सत्यवह को कहते हैं।
भारद्वाज पुत्र सत्यवह, अंगिरस को ज्ञान रे कहते हैं।।८।।

ब्रह्म सत्त्व के ज्ञान की, परम्परा रे कहते हैं।
किस विध क्योंकर किसे दिया, देख यहाँ पर कहते हैं।।९।।

स्वयंभू ब्रह्मा बन आये, मानस पुत्र अथर्व दिया।
कल्पना मात्र से ही उसने, अथर्व को रे जन्म दिया।।१०।।

अंगिरा उनका शिष्य कहूँ, सत्यवह शिष्य का शिष्य रे।
अंगिरा अथर्व वेद में, परम ज्ञान से है रे भरा।।११।।

वेद मन्त्र रे कह दिये, शैल वा का शिष्य रे था।
भृगु कुल में जन्म लिया, ब्रह्मवेत्ता वह ही हुआ।।१२।।

ऋग्वेद सम्बन्धी रे, अनेक ग्रन्थ वा ने रचे।
महा मन्त्र महा स्रोत रे, अंगिरस ने देख कहे।।१३।।

महाशैल शौनक ने भी, ब्रह्म विद्या ग्रहण करी।
मुण्डक उपनिषद् ऋषियन् ने, सुन रे शौनक सों कही।।१४।।

निजी ज्ञान वह न मानें, कहें रे उनने पाया था।
सीस झुका कर यही कहें, परम्परा से आया था।।१५।।

विनम्र भाव तो देख ज़रा, ज्ञान हुआ जाये चरण धरा।
प्रथम ज्ञान वह पा गये, यह किसी ने नहीं कहा।।१६।।

हर सन्त रे यही कहें, यह गुरु की देन है।
नव भावना यह नहीं, परम्परा की देन है।।१७।।

कोई नव अनुभव नहीं, जो रे ऋषिगण पाये हैं।
एको अनुभव यह नहीं, नाम निजी धराये हैं।।१८।।

कहे गये अरे गुरु दिया, अनुभव यह है गुरु कृपा।
शास्त्र में जो रे कह दिया, ब्रह्म से ही रे वह आया।।१९।।

जो जो उनने शास्त्र पढ़े, वही गुरु रे उनके भये।
गुरु चरण में सीस झुका, पुनः कभी न उठ सके।।२०।।

अपना नाम ही नहीं दिया, गुरु का नाम ही रह गया।
जो अनुभव जिसको हुआ, गुरु दिया ही कह गया।।२१।।

आधुनिक काल की बात नहीं, गुरु को भूल ही जाते हैं।
राम कृपा से जो पायें, अपना नाम धराते हैं।।२२।।

जिसे मिटाना ही रे था, प्रदुर करते जाते हैं।
परम सत्त्व वह साधक रे, कबहुँ नहीं रे पाते हैं।।२३।।

तुमको साधक कहते हैं, अपना नाम रे मत धरो।
तुमको मिटना ही रे है, अपना ज्ञान यह नहीं कहो।।२४।।

वास्तविकता भी यह ही है, तेरे कुल में यह ज्ञान भी है।
ध्यान लगा और देख ले, तव कुल नाम भी ज्ञान ही है।।२५।।

साधना पथ पे क़दम धरा, तनो कुल तो छूट गया।
तन जग से नाता जो, पूर्ण ही रे छूट गया।।२६।।

जिस कुल में तू आ बैठा, राम कुल उसे जान ले।
निज कुल की परम्परा, साधक तू पहचान ले।।२७।।

यही यहाँ पर कहते हैं, हर साधक ने यही कहा।
जो चरणन् में मिट गया, उसपे हुई रे गुरु कृपा।।२८।।

बार बार अरे देख ज़रा, साधक गुण वह कहते हैं।
किस विध होगी शास्त्र कृपा, शिष्य गुण वह कहते हैं।।२९।।

जग का कोण रे छोड़ करी, शब्द अर्थ भी छोड़ करी।
भावन् को रे पढ़ देखो, मिथ्या अर्थ रे छोड़ करी।।३०।।

गुरु परम्परा की कहें, कहें ज्ञान रे को' पाये।
परम अनुभव तो पाये, गर अहम् न रह पाये।।३१।।

जब लग समझे ज्ञानी तू, नव अनुभव यह तेरा है।
जान ले साधक अज्ञान का, गया नहीं अन्धेरा है।।३२।।

समाधिस्थ हुए पाये थे, कह लेते निजी अनुभव यह।
गुरु तो राह बताये थे, कहते निजी उपलब्धि यह।।३३।।

किसी ने कबहुँ नहीं कहा, यही कहा सब गुरु दिया।
बार बार वह चरण पड़े, सीस नहीं रे उठ सका।।३४।।

निज बल तप सों पाये थे, किसी ऋषि ने नहीं कहा।
बुद्धि बल से पाये थे, ऐसा वचन रे नहीं रहा।।३५।।

समाधि में निज ध्यान लगा, सत्त्व सार वह जाने थे।
नहीं नहीं यह नहीं कहा, निज बल से न जाने थे।।३६।।

गुरु कृपा परम्परा यह है, गुरु कृपा साधक यह है।
ब्रह्म कृपा रे यह है, परम कृपा बस साधक यह है।।३७।।

जब लग अहं रे साधक है, अहं कहे मैं पाया हूँ।
अहं को यह न याद रहे, सार तो गँवाया हूँ।।३८।।

पथ प्रदर्शन गुरु किया, शिष्य सभी रे चरण धरा।
कुछ भी न अपनाये वह, साधना कर कहे गुरु कहा।।३९।।

समर्पित होकर पाये थे, चरण में खो कर पाये थे।
सम्पूर्ण ही अपना रे वह, अस्तित्व खो रे पाये थे।।४०।।

किसी गुरु ने भी जानो, अपना नहीं रे जान लिया।
शिष्य ने ही देख लो, अपने गुरु को अमर किया।।४१।।

शिष्य कहा गुरु दिया, गुरु का यह ही नाम है।
शिष्य ने भी यह कहा, गुरु मेरा बस राम है।।४२।।

ब्रह्मवेत्ता गुरु मेरा, उसने यह रे मुझे कहा।
उसकी ही जब हुई कृपा, यह सब रे अनुभव हुआ।।४३।।

कोई अनुभव न अपनाये, एक शब्द न अपनाये।
शिष्य शब्द भी छन्द भये, गुरु के मुख में धर आये।।४४।।

मंत्र कहे जग ने पढ़े, उसने कहा सब गुरु कहा।
किसी शिष्य ने आज तलक, अपना शब्द कोई नहीं कहा।।४५।।

देख साधिका कहते हैं, साधना इस विध होती है।
परम सत्त्व गर पाना है, आराधना इस विध होती है।।४६।।

गुरु कहा सब गुरु दिया, गुरु चरण में सब धरो।
धन्य गुरु मेरा आप वह, गुरु शरण में सब रहो।।४७।।

राम गुरु में भेद नहीं, गुरु ज्ञान में भेद नहीं।
गुरु परम में भेद नहीं, पर गुरु शिष्य में भेद नहीं।।४८।।

यही कहें वह बार बार, साधक नाता जान ले।
कौन गुरु रे तेरा है, परम्परा तो जान ले।।४९।।

गुरु शब्द लिखते रहे, जो गुरु कहा वह ही कहे।
अपना एको काज नहीं, निज संग्रह वह नहीं कहे।।५०।।

ज्ञान सार रे यह ही है, प्रणाली देख वह कहते हैं।
ज्ञान गंगा गुरु शिष्य, रूप में वह कहते हैं।।५१।।

निरंतर पावनी गंगा सम, ब्रह्मा भाव रे बहते हैं।
हर ऋषि मुझे गुरु दिया, यह ही मिट कर कहते हैं।।५२।।

यही विधि है पाने की, तव कुल में रे यही हुआ।
साधक कुल निज जान ले, जहाँ पे तूने क़दम धरा।।५३।।

सीस कभी न उठे वहाँ, गुरु तिलक रे लगाये हैं।
शिष्य हृदय में भाव बनी, गुरु ही बहते आये हैं।।५४।।

गर रे सार तू जान ले, परम ज्ञान पा जायेगा।
अनित्य संग पूर्ण मिटे, सत्त्व स्वरूप हो जायेगा।।५५।।

बस रे यह ही ज्ञान है, या कहूँ यह ज्ञान विधि।
या कह लो गर समझ सको, यह ही है इक नाम विधि।।५६।।

संत कुल रे यह ही है, शिष्य कुल रे यह ही है।
जहाँ पे तूने क़दम धरा, तेरा कुल रे यह ही है।।५७।।

९-८-६१
(चक्की रैस्ट हाऊस, डलहौज़ी)

आत्म-समर्पण का महायज्ञ

पितामह - श्री सी. एल. आनन्द

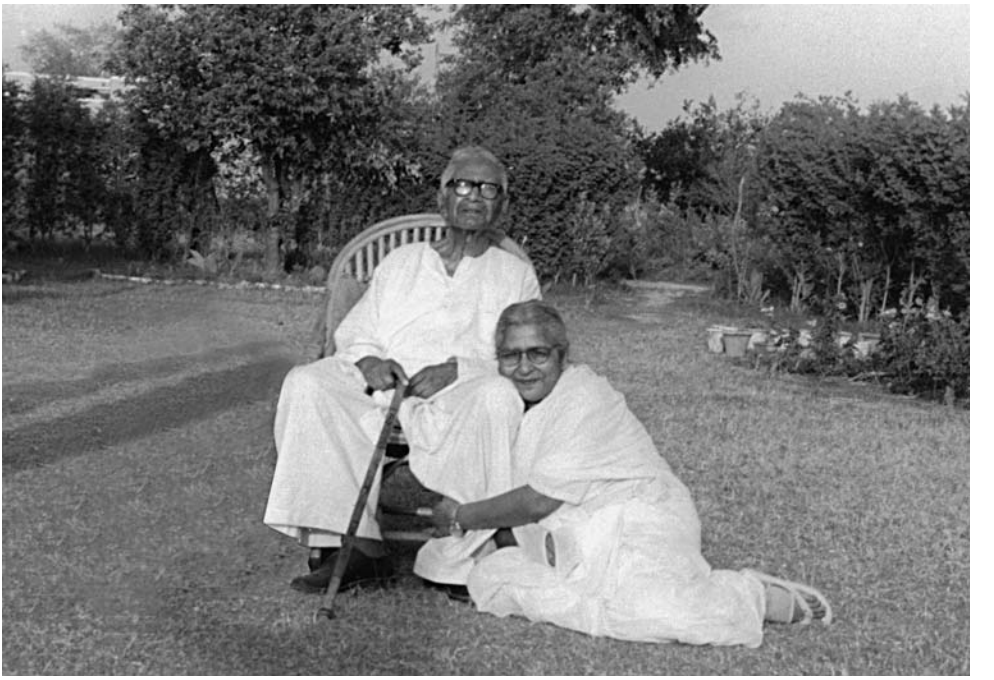

(यह लेख अगस्त १९७४ में अर्पणा पुष्पांजलि के प्रथम अंक में, पिताजी के द्वारा लिखा गया था)

परम पूज्य माँ के पिताजी, श्री सी.एल. आनन्द, अपने समय के एक प्रख्यात न्यायविद थे। उन्होंने अनेकों न्याय विषयक पुस्तकें भी लिखी थीं। वह पंजाब विश्वविद्यालय के लॉ कालेज के प्रथम भारतीय प्रिंसिपल थे। न्याय के क्षेत्र में जानी मानी हस्ती होने के साथ-साथ उन्होंने गीता, उपनिषद्, वेद, बाईबल, कुरान इत्यादि अनेकों शास्त्रों का भी गहन अध्ययन किया था। इस के परिणामस्वरूप ही वह अपनी पुत्री अर्थात् परम पूज्य माँ की विलक्षणता को पहचान पाये।

अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में वह अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिये अपनी ही पुत्री, पूज्य माँ, से प्रश्न पूछा करते थे। मन्दिर के बाहर दिनचर्या में तो पिताजी माँ को बेटी कहकर पुकारते और माँ भी आदर्श पुत्री का प्रमाण देते हुए उनकी छोटी से छोटी सेवा करतीं। मन्दिर में पिताजी अपने ज्ञान, आयु और नाते का गुमान भूल कर अति विनम्र भाव से अपनी ही बेटी को 'माँ' सम्बोधित करके, उनसे अपने संशय के निवारण अर्थ शास्त्र सम्बन्धी प्रश्न पूछते। उस समय पूज्य माँ भी गुरुवत् उनके हर संशय का समाधान करतीं। ज्ञान का विज्ञानमय रूप समझाते हुए, पूज्य माँ पिताजी को शास्त्रीय ज्ञान को जीवन में ढालने के लिए नित्य प्रेरित करतीं।

अपने जीवन के अंतिम दिनों में मृत्यु शय्या पर होते हुए भी वह पूज्य माँ से प्रश्न पूछते रहे।

अथर्व वेद काण्ड ४, सूक्त १४ में, भगवान् ने आत्म-समर्पण महायज्ञ का स्वरूप बताया है जिससे माँ के जीवन के स्वरूप की तुलना की जा सकती है। आजकल यही त्याग रूपा यज्ञ हमारी आँखों के सामने मधुबन में 'माँ' के जीवन में हो रहा है... जो लोग इस वैदिक यज्ञ के स्वरूप को नहीं जानते उनके लिये 'माँ' के जीवन के इस गूढ़ पहलू को समझना एक कठिन बात है।

यज्ञ का वेद में अर्थ है - 'त्याग' अर्थात् विश्व की भलाई के लिये अपने धन, द्रव्य, ज्ञान और शक्ति आदि का दान करना। गीता में भगवान् ने यज्ञ के इसी भाव को सृष्टि का आधार बताया है, जो प्रजापति ने सृष्टि की उत्पत्ति के साथ ही मनुष्यों के हृदय में उनके कल्याण के लिये उत्पन्न किया।

विश्व की भलाई के लिये मनुष्य जितने कर्म करता है, वह सब यज्ञ कहलाते हैं। इस प्रकार का यज्ञ वेदानुसार मनुष्य के जीवन में वायु और जल की शुद्धि के लिये और निरोग्यता के लिये स्थूल अग्नियों की आहुतियों से आरम्भ होता है। यह आत्म-समर्पण के मार्ग पर स्वार्थ के त्याग की पहली पौड़ी है।

वेद के मन्त्रों में जो 'स्वाहा' का शब्द आता है उसका अर्थ यह है कि मैं अपने स्वार्थ को त्यागता हूँ। यह यज्ञ में दी हुई आहुति, मैं दूसरों की भलाई के लिये देता हूँ, अपने भोग बढ़ाने के लिये नहीं! इस विधि से मनुष्य अपने जीवन में समर्पण की शक्ति को आहिस्ता-आहिस्ता बढ़ाता जाता है।

इस उन्नति के मार्ग पर चलता हुआ जब साधक अपना सर्वस्व विश्व की भलाई के लिये अर्पण कर देता है तो उसके जीवन में उन्नति की प्रथम मंज़िल समाप्त होती जाती है। मगर इस प्रकार का भौतिक यज्ञ जो सब मनुष्यों के गृहस्थ के जीवन में आवश्यक है, निचली श्रेणी का कहा है।

यह साधक के जीवन को सुखी बनाने और स्वर्ग प्राप्ति का साधन है, मगर मोक्ष जिसे वेद में आत्म-ज्योति कहा है उसका द्वार नहीं। वह स्थिति उससे बहुत ऊँची है और उसका मार्ग भी कठिन है, यद्यपि नामुमकिन नहीं। जैसे गीता में भगवान् ने कहा है कि बहुतेरे जीव अपनी हिम्मत से उस अवस्था को पा चुके हैं जो भगवान् का अपना स्वरूप है।

आत्म-ज्योति वेद में वह अवस्था है, जहाँ साधक के कर्म दैवी और स्वाभाविक बन जाते हैं। उसमें किसी प्रकार की फल प्राप्ति और स्वर्ग की भी इच्छा नहीं रहती। इस अवस्था का स्थूल रूप वेद में भयानक शब्दों में बताया है। मगर ऐसा प्रतीत होता है, कि माँ ने (ताकि ऐसा न हो कि साधक डर जाए) इस मंजिल का वर्णन तनो दान के नाम से अपने सत्संगों में कहा है।

साधक के जीवन में आध्यात्मिक उन्नति के मार्ग पर, यह आत्म समर्पण की आख़िरी मंज़िल है। इसे वेद की भाषा में आत्म ज्योति कहा है। यह वह अवस्था है, जहाँ साधक अपने सम्पूर्ण शरीर को सब अंगों समेत विश्व रूप भगवान को अर्पण कर देता है। अब उसमें अपनाने का भाव ख़त्म हो जाता है। इस पूर्ण आहुति के पश्चात् वह केवल अजन्मा अमृत

स्वरूप आत्मा रह जाता है। जिसके विषय में भगवान् ने गीता में कहा है -

'यज्ञशिष्टामृतभुजो यान्ति ब्रह्म सनातनम्।' ३/४१

जिस अवस्था में साधक सभी कुछ, जिसे वह अपनाता है, भगवान् के अर्पण नहीं कर देता, आत्म-समर्पण का यज्ञ पूर्ण नहीं होता। पूर्ण आहुति ही ब्रह्म प्राप्ति का द्वार है। वेद में उसका वर्णन इस प्रकार है।

साधक भगवान से कहता है -

"जो कुछ मेरा है, उसको लेकर तथा सब शरीर, सब इन्द्रियाँ, सब आत्म शक्तियाँ, सब पुरुषार्थ ले करके तुझे प्राप्त होता हूँ और तुझमें प्रविष्ट होता हूँ।"

जब साधक ने विश्व की भलाई के लिये अपने तन का भी यज्ञ कर दिया, तो व्यक्ति रूप से उठकर वह विश्व रूप बन जाता है। उसकी आत्मा जो पहले व्यक्ति रूप में अपने ही शरीर में थी, सारे विश्व में फैल जाती है। उसकी व्यक्तिगत, पारिवारिक और जाति भाव सब मिट जाते हैं। जब सारा विश्व ही उसका शरीर बन गया तो जहाँ कहीं वह दुःख देखता है, दुखिया को सुखी बनाने का यत्न करता है।

गीता में ऐसे विश्व रूप बने हुए आत्मा को योग-युक्त कहा है। वह सब प्राणियों को समदृष्टि से देखता है। अपने आप सब भूतों में रहता हुआ और सब प्राणियों को अपने में देखता है। जीवन की इस उच्च अवस्था पर पहुँचने के लिये महायज्ञ चाहिए - जिसका वेद में इस प्रकार वर्णन है।

"पूर्व दिशा के लिए इस अजन्मा का सिर अर्पण है, दक्षिण दिशा के लिए दक्षिण कक्षा, पश्चिम दिशा के लिये मेरा पिछला भाग अर्पण है - उत्तर दिशा के लिए उत्तर कक्षा, ऊर्ध्व दिशा के लिए मेरी पीठ की रीढ़ अर्पण है, ध्रुव दिशा के लिए मेरा पेट, मध्य दिशा के लिये मेरा मध्य भाग अर्पण है। इस प्रकार सब अँगों से विश्व रूप बना हुआ मैं परमात्मा को सब तरफ़ से अनुभव करता हूँ।"

वेदों में इन मन्त्रों का तात्पर्य जीव को समझने के लिए यह है कि भगवान ने जो इस संसार में उसे मानुषिक चोला दिया है वह केवल उसके अपने भोग और सुख के लिए नहीं, सब विश्व की भलाई के लिए दिया है। जब तक यह विश्व को समर्पण नहीं होता, यज्ञ पूर्ण नहीं होगा।

वेद का कहना है कि अजन्मा जीवात्मा ब्रह्म के तेज से प्रकट हुआ है और कर्म गति के कारण जन्म-मरण के चक्र में फँसा हुआ है। उसने अग्नि रूप आत्म ज्योति को फिर से प्राप्त करना है। पृथ्वी से अन्तरिक्ष को बढ़ना है। वहाँ से द्यौ लोक को, फिर आख़िरी पौड़ी आत्म ज्योति की है, जो देवों का स्थान है।

जो कोई इस वेद में बताए हुई आत्मिक उन्नति के मार्ग को नहीं जानता वह "माँ" के वर्तमान स्वरूप के इस पहलू को नहीं समझ सकता, जहाँ अपने सुख-दुःख की कोई चिन्ता नहीं रही, और जीवन का केवल मात्र प्रयोजन सब दुखियों को सुखी बनाना उनका स्वभाव बन चुका है।

यह दूसरों की सेवा की बात नहीं। अब माँ की आत्मा का क्षेत्र अपना तन नहीं - वह तो महायज्ञ में भगवान को समर्पण हो चुका है। अब सारा विश्व उनका क्षेत्र बन गया है। वेद में साधक कहता है, "मैं परमात्मा की यज्ञ से पूजा करता हूँ। और स्वर्ग लोक से ऊपर चढ़ कर आत्म ज्योति की अवस्था को प्राप्त होता हूँ।"

यही इस समय माँ के वर्तमान स्वरूप का एक पहलू है।

❖ ❖ ❖

Form IV (See Rule 8)

1. Place of Publication: Arpana Trust, Madhuban, Karnal 132037, Haryana.
2. Periodicity of Publication: Quarterly
3. Printer's name: Mr. Ajay Mittal Nationality: Indian
   Address: Sona Printers Pvt. Ltd., F-86/1 Okhla Industrial Area, Phase I, New Delhi 110020
4. Publisher's name: Mr. Harishwar Dayal Nationality: Indian
   Address: Arpana Trust, Madhuban, Karnal 132037, Haryana.
5. Editor's name: Ms. Poonam Malik Nationality: Indian
   Address: Arpana Trust, Madhuban, Karnal 132037, Haryana.
6. Names and addresses of individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than one percent of the total capital: Arpana Trust.

I, Harishwar Dayal, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Harishwar Dayal

Arpana Trust, Madhuban, Karnal, Haryana

ज्ञान में अहम् जो मिट जाये,
ज्ञान स्वरूप हो जाये है!

अर्पणा प्रकाशन 'प्रज्ञा प्रतिभा' में से

तत्व विस्तार :

जब लग ज्ञान मन तुझको है, न्यून ज्ञान तव ज्ञान है।
ज्ञान भाव जब मिट जाये, वह ही परम ज्ञान है।।१।।

तन तद्रूप तू हो करके, मन बुद्धि अपनाये है।
परम ज्ञान जब हो जाये, इन सों परे हो जाये है।।२।।

ज्ञान भाव जब मिट जाये, ज्ञानी तब हो जाये है।
ज्ञान में अहम् जो मिट जाये, ज्ञान स्वरूप हो जाये है।।३।।

मन यह जब लौ बाक़ी है, मनो प्रवाह भी बहता है।
ज्ञान स्वरूप अभी नहीं हुआ, मिथ्या भाव में रहता है।।४।।

मन चंचल तेरा नित्य बहे, कहे ज्ञान मुझे हो गया।
मूर्ख मिथ्या भावन् का, अभिमान है हो गया।।५।।

मन ही महा असाधन है, विघ्न है ज्ञान की राहों में।
हर साधक के नित्य ही, यह ही आये राहों में।।६।।

मनोदुर्ग में बैठ करी, कहे विश्व विजयी तू हो गया।
क्यों न कहूँ निज मन में, तू देख है बंदी हो गया।।७।।

मनो प्रहार न सह सके, आन्तर में है अरि तेरा।
छोड़ दे मन के बंधन अब, आन मिले तुझे हरि तेरा।।८।।

महा रोग यह मन ही है, राग द्वेष सों भरा हुआ।
जान मना इस मन में ही, अरि द्रोह है भरा हुआ।।९।।

ज्ञान श्रृंखला बन जाये, गर यह मन ही न माने।
मनो मिटाव है परम मिलन, यह इतना भी न जाने।।१०।।

मन मिटे तो मौन भये, निर्भय स्वतः ही हो जाये।
वृत्ति जो उसको छोड़ दे, ज्ञान स्वतः ही हो जाये।।११।।

मनोमौन ही आनन्द है, मनोमौन ही लक्ष्य भी है।
मौन ही उसकी राह भी है, यह भी अब प्रत्यक्ष ही है।।१२।।

साधक मन है मित्र तेरा, असाधक भये तो अरि भये।
महा करुणा राम की जान ले, गर यह मन साधक भये।।१३।।

मनो अभाव ही राह है, सत्त्व ज्ञान को पाने की।
संकेत इसी में पायेगी, मनोस्थिति तू जानेगी।।१४।।

अखण्ड मौन ही ज्ञान है, ज्ञान वृत्ति का मौन है।
परम सत्त्व तो मौन है, राम मेरा भी मौन है।।१५।।

स्वरूप झलक से कुछ न हो, स्वरूप स्थिति ही ज्ञान है।
मिल के जो कभी न बिछुड़े, वह ही परम विश्राम है।।१६।।

ज्ञान अज्ञान यह सम्पूर्ण, बुद्धि कोण से जो कहो।
विषय ज्ञान ही होता है, सत्त्व का ज्ञान चाहे कहो।।१७।।

अध्यात्म ज्ञान जिसे कहें, अज्ञान में ही तो होता है।
गुण बँधा यह शब्द बँधा, मायिक मन में होता है।।१८।।

अज्ञान बिना कोई ज्ञान नहीं, माया में ही होता है।
मायिक मन मायिक बुद्धि, को ही तो यह होता है।।१९।।

माया में मायिक मन में, मायिक को गर जान लिया।
माया से गर न उठे, परम को न जान लिया।।२०।।

भाव परे वह मन परे, बुद्धि परे ही होता है।
ज्ञान स्वरूप जिसे शास्त्र कहें, माया परे वह होता है।।२१।।

ज्ञान अज्ञान सों वह परे, शब्द परे वह होता है।
शब्द में वह क्या आ पाये, भाव परे जो होता है।।२२।।

मनो प्रवाह सों वह परे, बुद्धि में न आ सके।
बिन अनुभव वा अनुभव हो, अनुभव में न आ सके।।२३।।

परा ज्ञान अपरा ज्ञान, अज्ञान में ही होते हैं।
शब्द बधित जो हो जाये, जड़ ज्ञान वे होते हैं।।२४।।

आत्म को जो दर्शाये, ज्ञान उसे ही कहते हैं।
परम ओर जो ले जाये, ज्ञान उसे मन कहते हैं।।२५।।

जग प्रवाहित ज्ञान जो, अज्ञान ही उसे कहते हैं।
बाह्यप्रज्ञ का ज्ञान जो, अज्ञान ही उसे कहते हैं।।२६।।

बाह्य प्रज्ञता अज्ञान है, आन्तर प्रज्ञता ज्ञान है।
परम संकेत जो करे, उसे कहें मन ज्ञान है।।२७।।

ज्ञान प्रदर्शक अज्ञान है, स्वरूप प्रदर्शक ज्ञान है।
परम ओर जो ले चले, वह ही तो मन ज्ञान है।।२८।।

चाह नितान्त अभाव हो, वृत्ति मौन तब हो जाये।
नितान्त वृत्ति अभाव हो, तब ही ज्ञान यह हो पाये।।२९।।

पूर्ण चाहना छोड़ मना, चाहना राह में आये है।
बिन प्रयोजन प्रीत लगा, ज्ञान उभर तब आये है।।३०।।

राम में चित्त लगाईये, जब लौ मन यह साथी है।
ज्ञान की चाहना छोड़ मना, जब जग चाहना बाकी है।।३१।।

चाहना एक ही रह जाये, अन्य चाह न उठ पाये।
तब ही जानो मन मेरे, ज्ञान स्रोत वहाँ बह जाये।।३२।।

शब्द ज्ञान जितना भी हो, अहम् रहे न अनुभव हो।
परम मौनी ज्ञान स्वरूप, मन मिटे अनुभव तब हो।।३३।।

आन्तर में जो ज्ञान बहे, उसकी बात भी जान ले।
चित्त शुद्धि अनुरूप बहे, इसका राज़ भी जान ले।।३४।।

सूर्य कोण से अस्त उदय, का प्रश्न ही नहीं उठे।
जान मना उस सूर्य का, उदय अस्त कभी नहीं होये।।३५।।

नित्य प्रकाश वह देता है, वह तो अस्त कभी न होये।
उत्पत्ति या लय भी, सूर्य की कभी न होये।।३६।।

दिन रात फिर भी कहें, आश्रित इसपे होता है।
प्रकाश स्वरूप में देख कहें, अंधियारा निहित ही होता है।।३७।।

सूर्य गुण नहीं दिन रैन, उसमें आरोपित होते हैं।
भूमि कोण से तुम कह लो, मिथ्या आरोपित होते हैं।।३८।।

भूमि ही फिर घूम करी, राहों में आ जाये है।
भूमि अंग हो सूर्यमुखी, प्रकाशित वह हो जाये है।।३९।।

दूजी ओर जो अंग रहे, अंधियारा वहाँ हो जाये।
सूर्य कारण नहीं नहीं, भूमि कारण हो जाये।।४०।।

अखण्ड सुख में जान मना, ज्ञान अज्ञान कुछ भी नहीं।
आत्म तत्व है नित्य सत्य, वहाँ पे यह सब कुछ नहीं।।४१।।

अशुद्ध चित्त यह अहम् तेरा, राहों में आ जाये है।
कर्मन् बीज या तुम कह लो, दिन रैना बनाये है।।४२।।

संग लग्न और चाह मोह, ये ही आवरण हैं जान ले।
प्रकाश में अज्ञान परे, मनो प्रवाह यह जान ले।।४३।।

अखण्ड चेतन चेतन स्वरूप, शुद्ध स्वरूप तो है परे।
बुद्धि मन चित्त अहंकार, वहाँ तलक न पहुँच सके।।४४।।

वा तद्रूपता छोड़ दे, तन तद्रूपता छोड़ दे।
अहम् भाव तू छोड़ दे, मिथ्या आवरण यह छोड़ दे।।४५।।

बाक़ी वह रह जायेगा, ज्ञान ही जिसको कहते हैं।
केवल सत्त्व ही तब रहे, राम ही जिसको कहते हैं।।४६।।

मन रहित शक्ति प्रवाह, सहज स्थिति उसे तुम कहो।
केवल शक्ति जब रहे, राम की ही वह तुम कहो।।४७।।

सम्पूर्ण दृश्य जग है जो, अहम् शक्ति सों प्रदुर होये।
निर्माण कर वा शक्ति जो, जग उससों ही उभर पड़े।।४८।।

अहम् प्रथम संसरणा है, शक्ति इसी का नाम है।
चेतनता के समीपस्थ, संकल्प शक्ति अहम् यह है।।४९।।

यही रचे अज्ञान भये, प्रकाश राह में आये यह।
संस्कार भण्डार से, रूप रचती जाये यह।।५०।।

वस्तुतः सुन बन्धन और, मोक्ष कोई है नहीं।
निरर्थक शब्द यह होते हैं, प्रयोजन इनसे कोई नहीं।।५१।।

मम संग और चाह रहित जो, मृत्यु परे वह होते हैं।
अहम् जहाँ पर नहीं रहे, नित्य अमर वह होते हैं।।५२।।

मान्यता जन्मे और मरे, अहम् कहाँ जन्मे मरे।
संग कहाँ जन्मे मरे, और मन कहाँ जन्मे मरे।।५३।।

अतृप्त चाह संस्कार बने, तृप्ति को वह जन्म ले।
तव चाह ही उभर पड़े, अतृप्त वह अतृप्त रहे।।५४।।

जीवन चक्र यूँ ही चले, अब तो इसको जान ले।
जहाँ रैन हो अज्ञान कहे, दिन को ज्ञान ही जान ले।।५५।।

स्वरूप इन सों है परे, अहम् को तू जान ले।
अन्य बतियाँ छोड़ के, अपने को तो जान ले।।५६।।

याद रहे लो फिर कहूँ, मन यह सत्य तू जान ले।
ज्ञान ही बन्धन बने कहूँ, गर कहे तू जान ले।।५७।।

अहम् को ही जान मना, जाने अहम् ही न रहे।
जो अहम् वृत्ति साधक भयी, वह कहीं पे न रहे।।५८।।

पृथ्वी ही जो न रहे, प्रकाश ही एको तब रहे।
अहम् ही जो न रहे, स्वरूप ही एको तब रहे।।५९।।

३१-१-१९६२

उनका ध्यान नित्य लगा रहता है, वे समाधि में खो जाते हैं।

व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनन्दन।
बहुशाखा ह्यनन्ताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम्।।२/४१।।

यहाँ भगवान, अर्जुन को बुद्धि के विषय में समझाते हुए कहते हैं :

शब्दार्थ :

१. हे कुरुनन्दन! (अर्जुन)
२. यह निश्चयात्मिका बुद्धि एक ही है,
३. परन्तु निश्चय रहित पुरुषों की बुद्धियाँ,
४. बहुत भेद वाली और अनन्त होती हैं।

तत्व विस्तार :

व्यवसायात्मिका बुद्धि :

'व्यवसायात्मिका बुद्धि' एक ही लक्ष्य पर अग्रसर रहने वाले की होती है। नन्हीं!

१. योग अभिलाषी साधक की,
२. परम जिज्ञासु साधक की,
३. सत्पथ पथिक साधक की,
४. धर्म अनुसरण करने वाले महात्मा की,
५. केवल आत्मा को प्राप्तव्य और ज्ञातव्य मानने वाले की,
६. सत्मय जीवन के इच्छुक की,
७. ब्रह्म में निष्ठावान् की,
८. ब्रह्म ही जिसका लक्ष्य हो, उस श्रद्धापूर्ण साधक की,
९. सत् में परम निष्ठावान की,
१०. स्थिरमति निश्चयवान की,
११. परम के याचक की,

१२. परम के चाकर की - बुद्धि '**व्यवसायात्मिका**' होती है।

सत् में घनिष्ठ अनुराग होने के कारण उसकी बुद्धि एक ही होती है।

यानि :

क) एकाग्र और एक लक्ष्य में टिकी हुई बुद्धि होती है।

ख) हर वृत्ति विचार मिल कर एक लक्ष्य की ओर बढ़ते हैं।

ग) उसकी पूर्ण मानसिक शक्ति केवल परम को पाने के यत्न करती है और घनीभूत वृत्ति संग्रह रूपा असत् पर मानो प्रहार करती है।

घ) तत्व विवेक से संग हुआ तब जानो, जब हर वृत्ति एकटक उसे निहारने लगे। तब हानि-लाभ का ध्यान नहीं रहता।

ङ) सत्त्व से अटूट लग्न हो जाती है।

च) अन्य चाह की भी याद नहीं रहती।

छ) अन्य संग की भी याद ही नहीं रहती।

ज) वह जीवन में जो भी उद्योग करता है, लक्ष्य की पूर्ति के लिये ही करता है।

झ) कुशलता, प्रवीणता, दक्षता सबका उपयोग लक्ष्य की प्राप्ति के लिये ही करता है।

ञ) आन्तर में उसके युद्ध छिड़ा रहता है।

ट) सत्त्व तत्व विवेक में और तनो संग, अज्ञान में युद्ध छिड़ा रहता है।

ठ) 'मैं तन नहीं तो तनो संग क्यों रह गया'? वह नित्य इसी पर विचारमग्न रहता है।

ड) वह हर पल अपनी संगी वृत्तियों को निहारता हुआ, उन्हें अपने ज्ञान की अग्न से जलाने के यत्न करता रहता है।

ढ) कभी नीति, कभी ज्ञान से संगी वृत्तियों को मारता है।

वह तो बस एक चाहना युक्त होता है। एकाग्र चित्त आन्तर्मुखी होता है। उसके जीवन का एक ही ध्येय रह जाता है, चाहे कह लो वह एक बुद्धि वाला होता है। मानो वह समाधिस्थ हो गया हो और अपने आप में खो गया हो।

जीवन में हर काज कर्म में वह अपने आपको देखता है।

ऐसे साधक :

१. एकाग्र चित्त होकर जीवन में हर काज कर्म करते रहते हैं।

२. प्रतिरूप में, आन्तर में जो भी वृत्ति उठे, उसका हनन करते रहते हैं।

३. निज मनोविपरीतता सह नहीं सकते।

४. मनोचंचलता से वह भिड़ जाते हैं।

५. अपने राग-द्वेष से युद्ध करते रहते हैं।

६. तन को भी वह अपना नहीं कहते।

७. तनत्वभाव त्याग का अभ्यास वे निरन्तर करते जाते हैं।

८. जिन्होंने निज तन दे दिया, वे आन्तर्वासी हो जाते हैं।

९. दैवी गुण वहाँ स्वतः बहने लगते हैं, क्योंकि वे अपने लिये कुछ नहीं चाहते।

१०. जिन्होंने यह मान लिया कि उनका तन से कोई नाता नहीं, वे एकाग्र चित्त हो कर नित्य तनत्वभाव त्याग का अभ्यास करते हैं।

११. उनका ध्यान नित्य लगा रहता है। तब वे समाधि में खो जाते हैं।

१२. एकाग्र चित्त, वे सत्वृत्ति पूर्ण, अपने तन से दूर हो जाते हैं।

१३. तनोसंग मनोताप मिटे, तब पूर्ण समाधिस्थ हो जाते हैं।

१४. व्यवसायात्मिका बुद्धिवान तब ही वे हो जाते हैं।

अव्यवसायात्मिका बुद्धि :

१. बहु चाहना पूर्ति चाहती है।

२. उसके जीवन में बहुत लक्ष्य होते हैं।
३. वह विषय संगिनी, उपभोग चाहुक बुद्धि होती है।
४. प्रेय की ओर जाने वाली बुद्धि होती है।
५. विभिन्न चाहपरायण, वह एक चित्त कभी नहीं हो सकती।
६. ऐसी बुद्धि सत् असत् के विवेक को नहीं जानती।
७. सम्भव असम्भव को नहीं जानती।
८. जो है, उसे वह पहचानती नहीं।
९. जो हो न सके, और है ही नहीं, उसे वह सत् मानती है।
१०. प्रवीण तो है, चतुर भी है, पर वास्तविक सत्य की इसे समझ नहीं है।
११. ऐसी बुद्धि मोहग्रसित होती है। जो हक़ीक़त को न समझ सके, यह ऐसी भ्रमित बुद्धि है।
१२. यह बुद्धि बहु शाखापूर्ण, बहु चाहना पूर्ण होती है। बहु लक्ष्य याचक यह बुद्धि होती है।
१३. अनन्त बुद्धियाँ उसकी होती हैं, या अनन्त वृत्तियों वाली यह बुद्धि होती है।
१४. यह बुद्धि बाह्यप्रज्ञ की होती है।
१५. यह बुद्धि मिथ्या सिद्धान्तों से बँधी होती है।
१६. यह बुद्धि वास्तविकता के दर्शन में विघ्न बन जाती है।
१७. यह बुद्धि उद्विग्नता को जन्म देती है।
१८. अधर्म स्थापनकर भी यह होती है।

इस बुद्धि का जन्म कैसे होता है? अब यह भी समझ लो :

क) तन को जब अपना कहते हो, तब अव्यवसायात्मिका बुद्धि का जन्म होता है।
ख) तन से जब संग हो जाता है, तब अव्यवसायात्मिका बुद्धि बढ़ने लगती है।
ग) तन की स्थापना के लिये काज जब करते हो, तब अव्यवसायात्मिका बुद्धि बढ़ने लगती है।
घ) नित्य तनोइन्द्रियों का रुचिकर भोग ही चाहते हो, इस कारण उस बुद्धि की अनन्त शाखायें बन जाती है।
ङ) जितनी इन्द्रियाँ हैं, जितने विषय पूर्ण ब्रह्माण्ड में भरे हुए हैं और हर विषय से जहाँ इन्द्रिय सम्पर्क होता है, वह रुचिकर या अरुचिकर बन जाता है।
च) इन्द्रिय रिझाव के लिये फिर जीव पसन्द के पीछे भागता है।
छ) जो हमें पसन्द नहीं आये उससे मन निजात चाहता है।
ज) अपने में भी जो गुण पसन्द नहीं आते, उनको भी वह छुपाना चाहता है।
झ) जीवन भर अरुचि और रुचि में अपनी पूर्ण शक्ति गँवा देता है।

सो, ऐसे जीव के जीवन में अनेकों लक्ष्य बन जाते हैं और उन्हें पूरा करने के लिये उसे अनेकों प्रकार की बुद्धियों की आवश्यकता पड़ती है। अनेकों चाहनाओं से प्रेरित हुई बुद्धियाँ अनेकों रूप धर लेती हैं। उनकी बुनियाद में अनेकों चाहनायें होती हैं।

यह लोग सत् चाहते नहीं, इसलिये अपनी अनेक चाहनाओं को भी इन्हें छुपा कर पूरा करना पड़ता है।

सत् अनुयायी का तो एक ही लक्ष्य होता है, उसे तो तनत्वभाव से उठना है। उसकी बुद्धि निरन्तर इसी प्रयत्न में लगी रहती है।

जिसे अपनी रुचि के पीछे जाना है, उसकी बुद्धियाँ अनन्त हैं क्योंकि रुचिकर वस्तुयें अनन्त हैं।

यामिमां पुष्पितां वाचं प्रवदन्त्यविपश्चितः।
वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः।। २/४२।।

कामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदाम्।
क्रियाविशेषबहुलां भोगैश्वर्यगतिं प्रति।। २/४३।।

अब भगवान अनन्त शाखाओं वाली बुद्धि वाले लोगों के विषय में बताते हैं और कहते हैं :

शब्दार्थ :

१. हे अर्जुन! अविवेकी तथा सकामी पुरुष,
२. जो केवल, वेदवाद में रत हैं,
३. केवल स्वर्ग को ही परम श्रेष्ठ मानते हैं,
४. 'और कुछ नहीं है', ऐसे कहने वाले हैं,
५. वे जन्म रूप कर्मफल को देने वाली
६. और भोग तथा ऐश्वर्य प्राप्ति के लिये,
७. भान्ति भान्ति की बहुत सी विस्तार वाली क्रियायें करते हैं,
८. और इस प्रकार की जो दिखाऊ, शोभायुक्त वाणी है, उसे कहते हैं।

तत्व विस्तार :

नन्हीं! अब भगवान सकामी पुरुषों की बातें बताते हैं, जो केवल स्वर्ग को ही सर्वश्रेष्ठ मानते हैं। ऐश्वर्य से आसक्त हुए ये लोग बहुत बड़े-बड़े काम भी करते हैं, शास्त्र कथित वाक्यों से भी रति करते हैं और फिर अपना फ़ायदा उठाने के लिये लोगों से मीठी मीठी बातें करते हैं। ये सब चीज़ें जन्म मरण के चक्र को चलाने वाले कर्मफल को देने वाली हैं।

'वेदवादरताः' का अर्थ प्रथम समझ ले, वेदवाद से यहाँ तात्पर्य :

क) ज्ञान की बातों से है।
ख) सत् असत् की बातों से है।
ग) जीवन के बड़े बड़े सिद्धान्तों की बातों से है।
घ) शास्त्रों का आसरा लेकर उचित तथा अनुचित की बातों की ओर संकेत है।
ङ) वेदों के मन्त्रों को कण्ठस्थ करके बोलना भी हो सकता है।

रतः

१. किसी चीज़ में संलग्न होना,
२. किसी विषय से प्रसन्न होना,
३. किसी विषय का सम्भोग होना।
४. किसी विषय पर मुग्ध होना।
५. किसी विषय से संतोष प्राप्त करना।
६. किसी विषय में व्यस्त रहना।

सो वेदवाद रत लोग वे होंगे :

१. जो ज्ञान की बातें करते हैं, परन्तु ज्ञान को जीवन में नहीं मानते।
२. जो ज्ञान के वाक् कण्ठस्थ तो करते हैं, किन्तु अपने जीवन में उन्हें नहीं लाते।
३. जो ज्ञान के वाक् तक ही रह जाते हैं।
४. जो ज्ञान के शब्दों में ही प्रसन्नता पाते हैं।
५. जो ज्ञान के शब्दों में ही अनुरक्त होते हैं।
६. जो ज्ञान के शब्दों में व्यस्त होते हैं।
७. वे ज्ञान को भी अपना मतलब सिद्ध करने के लिये इस्तेमाल करते हैं।

भगवान कहते हैं कि सकामी लोग वेदवाद रत होते हैं और स्वर्ग को ही परम श्रेष्ठ मानते हैं। वे कहते हैं कि इससे बढ़ कर और कुछ भी नहीं। ये लोग अपने भोगैश्वर्य की प्राप्ति के लिये दिखलावे की और दूसरों

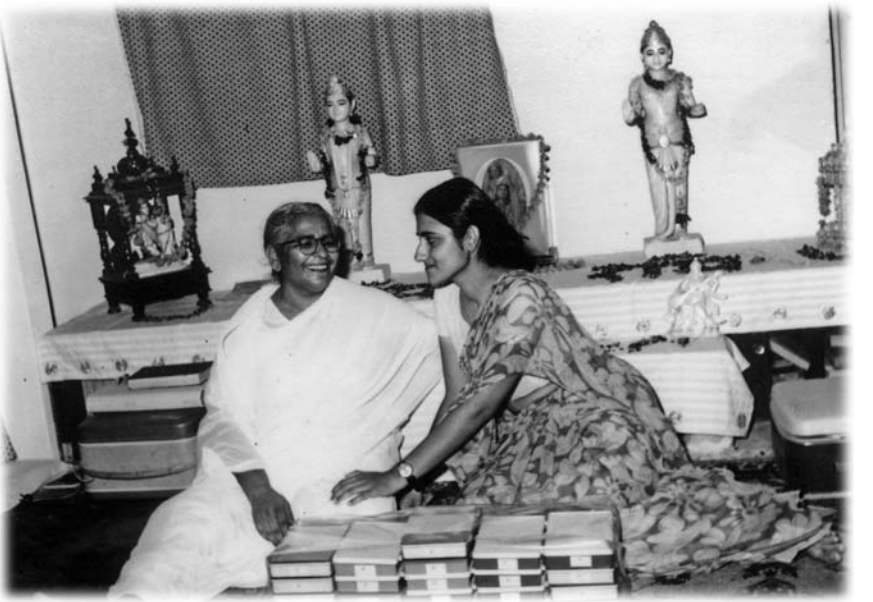

परम पूज्य माँ ने १९७३ में आभा भण्डारी (जो उस समय उम्र में काफ़ी छोटी थीं) के आग्रह पर उनके लिये गीता की सविस्तार व्याख्या की। इसलिये पूज्य माँ ने उन्हें कई जगह पर नन्हीं कह कर सम्बोधित किया है।

को खुश करने वाली वाणी बोलते हैं।

नन्हीं! भगवान कहते हैं, 'ऐसे चाहनाओं से प्रेरित ज्ञान के व्यापारी, अविवेकी गण, जन्म-मरण के कर्मफल ही पाते हैं।'

इसको ज़रा पुनः समझ!

१. वे लोग ज्ञान पढ़ कर पण्डितों की सी बातें करते हैं।
२. सच बोलते हुए डरते हैं, इस कारण मीठी-मीठी, लोकप्रिय और दूसरों के मनभावन् बातें करते हैं।
३. जहाँ पर उन्हें कोई आर्थिक लाभ नज़र आये, वहाँ पर झुक जाते हैं।
४. जहाँ पर उन्हें कोई मान दे, वहाँ पर झुक जाते हैं।

यानि, वे लोग तो ज्ञान को बेचते हैं।

नन्हीं! वे लोग तो राम को बेचते हैं।

क) वे लोग अपना जीवन यज्ञमय नहीं बनाते।
ख) वे मानो ज्ञान से व्यभिचार करते हैं।
ग) वे लोग ज्ञान के यथार्थ अर्थ को भी बदल देते हैं।
घ) अपने ही ज्ञान से वे स्वयं तुलना नहीं चाहते।
ङ) वे बाहर साधुता दिखा कर, दुनिया से छुपा कर अपनी ही कामनाओं को पूर्ण करते हैं।
च) वे लोग दूसरों को भरमा देने वाली वाणी बोलते हैं।
छ) वे लोग दूसरों को आकर्षित करने वाली वाणी बोलते हैं।

वे कहते हैं, 'संसार में भोगैश्वर्य पूर्ण स्वर्ग के अतिरिक्त कुछ भी नहीं।' वे स्वर्ग को ही परमश्रेष्ठ, प्राप्तव्य और जीवन का अन्तिम लक्ष्य मानते हैं। इस कारण वे पुष्पित वाणियाँ भी बोलते हैं और बहुत बड़े विस्तार वाली क्रियायें भी करते हैं। किन्तु इन सब क्रियाओं के पीछे निष्काम भाव नहीं होता, बल्कि स्वार्थ ही होता है। ये सब काज कर्म तथा पुष्पित वाणियाँ जीव को केवल जन्म-मरण के चक्र से बाँधती हैं। ❖

परम पूज्य माँ

अर्पणा
समाचार पत्र

अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन,
करनाल, हरियाणा
मार्च २०१५

अर्पणा से समाचार

अर्पणा आश्रम में ~ वैदिक विवाह

पूज्य छोटे माँ के आशीर्वाद से ६ दिसम्बर को, मधुबन स्थित अर्पणा के प्रागंण में, अर्पणा की बेटी कृपांजलि दयाल का विवाह मनदीप सिंह के साथ ४०० से अधिक परिवार के सदस्यों एवं मित्रगणों की शुभकामनाओं एवं आशीर्वाद से सम्पन्न हुआ।

वर एवं वधु ने शास्त्रों के सम्मुख बैठ कर वैदिक परम्परा के अनुसार शादी की प्रतिज्ञायें दोहराईं। छोटे माँ ने शास्त्रों के ऊपर रखे ज्ञान के प्रकाश के प्रतीक दीप को प्रज्वलित किया।

परम पूज्य माँ द्वारा की गई वैदिक विवाह की व्याख्या से वहाँ पर एकत्रित सभी लोग मन्त्रों का व्यावहारिक अर्थ समझ पाये एवं विवाह के सभी पावन अनुष्ठानों से जुड़ सके।

क्रिसमस समारोह

क्रिसमस से एक सप्ताह पूर्व भक्तिगान के लिए आये करनाल के इसाई समुदाय के कुछ लोगों का स्वागत करते हुए अर्पणा में ख़ुशी की लहर आ गई।

कई वर्ष पूर्व अर्पणा द्वारा मंचन किए गये नाटक 'एक गैर इसाई भक्त की दृष्टि के माध्यम से यीशु मसीह' के पश्चात्, यह इनसे आपसी प्यार की एक परम्परा बन गई है।

अर्पणा अस्पताल

गर्भाशय ग्रीवा एवं स्तन कैंसर शिविर

अर्पणा अस्पताल में, १४-१५ नवम्बर को ग्रीवा एवं स्तन कैंसर शिविर का आयोजन किया गया जहाँ ८७ रोगियों ने भाग लिया। डॉ कविता रानी, स्त्री रोग विशेषज्ञ और डॉ निशा गाँधी ने गर्भाशय ग्रीवा कैंसर के लिए महिलाओं की जाँच की, जबकि डॉ विवेक आहुजा, ऑन्कोलॉजिस्ट एवं सर्जन ने, स्तन कैंसर के रोगियों की जाँच की।

सीबीएम समर्थित नेत्र कार्यक्रम

मधुमेह रेटिनोपैथी एवं ग्लूकोमा : दिसम्बर २०१४ और जनवरी २०१५ में, अर्पणा अस्पताल ने करनाल के गाँवों में रेटिनोपैथी के लिए ४ नेत्र शिविर एवं ग्लूकोमा के लिए ४ नेत्र शिविर आयोजित किये। यहाँ ९६६ रोगियों की जाँच करके उन्हें निःशुल्क दवाइयाँ वितरित की गईं।

स्कूल नेत्र जाँच शिविर : सीबीएम के सहयोग से अर्पणा की नेत्र परियोजना के अन्तर्गत अर्पणा अस्पताल द्वारा, नवम्बर में ७ गाँवों के नेत्र शिविरों और ८-१५ दिसम्बर को २ गाँवों, बरसत और कोहण्ड में, ४,४५६ छात्रों के नेत्रों की जाँच की गई।

अस्थि रोग शिविर : अर्पणा अस्पताल द्वारा जनवरी २०१५ में, गुढा एवं समालखा गाँवों में, २ अस्थि रोग शिविरों में १०७ रोगियों की जाँच की गई एवं निःशुल्क दवाइयाँ वितरित की गईं।

स्कूल के बच्चों की नेत्र जाँच में समर्थन के लिए और मधुमेह रेटिनोपैथी एवं मोतियाबिंद के नेत्र शिविरों के लिए, अर्पणा सीबीएम का अत्यन्त आभारी है।

हरियाणा

एजीएम द्वारा शिशु विकलांगता एवं साफ़-सफ़ाई के प्रति जागरूकता को बढ़ावा

१६ नवम्बर को, अर्पणा द्वारा चलाये जा रहे ३०८ स्वयं सहायता समूहों में से, ६५ गाँवों की १२०० महिलाओं ने, अराईपुरा गाँव में वार्षिक आम बैठक में भाग लिया। विकलांगता के कारणों एवं शिशु विकलांगता की संख्या को कम करने के विषय में जागरूकता बढ़ाने के लिए महिलाओं ने एक नाटक का प्रदर्शन किया। 'स्वच्छ भारत' अभियान पर भी एक नाटक प्रस्तुत किया गया जहाँ साफ़-सफ़ाई के महत्व एवं रोगों की रोकथाम के विषय में बताया गया।

विकलांगता में समर्थन देने के लिए सीबीएम का एवं महिला सशक्तिकरण और स्वच्छता एवं बालिका अभियान में समर्थन देने के लिए आईडीआरएफ और गिव टू एशिया का हार्दिक धन्यवाद!

हिमाचल

किसानों के लिए जानकारी

२८ नवम्बर को, अर्पणा के गजनोई केन्द्र में आयोजित शिविर में, नाबार्ड के ज़िला प्रबन्धक ने किसान क्लबों के सदस्यों एवं दूरदराज़ क्षेत्रों के स्वयं सहायता समूहों को किसान समूहों से प्राप्त होने वाले फायदों के विषय में जानकारी दी। इसमें प्रशिक्षण के लिए एक निधि एवं खेती में नवीनतम तकनीकों, डेयरी, मशरूम उगाना, मधुमक्खी पालन और अन्य आय सृजन गतिविधियों से होने वाले लाभ सम्मिलित हैं। नाबार्ड से सहायक प्रबन्धक के साथ उप ज़िला प्रबन्धक ने भी किसानों की आगामी ज़रूरतों एवं उनकी गतिविधियों के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए दूरदराज़ के ५ गाँवों के किसान क्लबों का दौरा किया।

धर्मशाला में आयोजित कार्यशाला

११ नवम्बर को, धर्मशाला में नाबार्ड द्वारा आयोजित कार्यशाला में अर्पणा के किसान क्लबों के सदस्यों ने भाग लिया। सरकारी अधिकारियों और कृषि विश्वविद्यालयों की सहायता से एवं संकर बीजों, नई कृषि तकनीकों और नई फसलों की सहायता से आय में वृद्धि कर पा रहे किसानों की बातें सुनने के पश्चात् नाबार्ड के अधिकारियों ने उन्हें ऋण और प्रशिक्षण देने का प्रस्ताव रखा।

हिमाचल प्रदेश में स्वास्थ्य और विकास कार्यक्रमों में समर्थन देने के लिए टाइड्ज़ फाउंडेशन एवं टॉम व बारबरा सार्जेंट का अतीव धन्यवाद!

हरियाणा

गणतंत्र दिवस मेला उत्सव

२० गाँवों से अर्पणा स्वयं सहायता समूहों की ८५० महिला सदस्यों द्वारा संगोही गाँव में, २५ जनवरी को गणतंत्र दिवस पर एक मेले का आयोजन किया गया। यहाँ पर नाटकों द्वारा सरकारी अभियान 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' एवं 'स्वच्छ भारत' को दर्शाया गया। यहाँ खिलौनों और उपहारों के स्टॉलों के साथ-साथ खाने के स्टॉल भी थे। खेलों में महिलाओं द्वारा रस्साकशी खेल भी खेला गया। सभी ८५० महिलाओं ने कन्या भ्रूण हत्या को रोकने और साफ़-सफ़ाई को बढ़ावा देने का प्रण लिया।

टाइड्ज़ फाउंडेशन एवं टॉम व बारबरा सार्जेंट की 'महिला सशक्तिकरण' और 'विकलांगता' एवं 'बेटी बचाओ अभियान' में समर्थन के लिए हार्दिक सराहना

दिल्ली के कार्यक्रम

मोलरबन्द, नई दिल्ली की झुग्गी पुर्नवास कॉलोनियों से

मानवीय मूल्यों पर आधारित बच्चों के नाटक

२२ जनवरी को, बच्चों द्वारा निम्नलिखित महत्वपूर्ण विषयों पर जागरूकता उत्पन्न करने के लिए नाटक प्रस्तुत किये गये :

- ‘भ्रष्टाचार’
- ‘शिक्षा का महत्व’
- ‘आत्मरक्षा’

स्वैटरों का वितरण

श्रीमती कृष्णा श्रॉफ एवं श्रीमती सुषमा अग्रवाल ने दिल्ली की इस कठोर सर्दी में बच्चों को गर्म रखने के लिए २०० स्वैटर उपलब्ध करवाये।

नई कम्प्यूटर प्रयोगशाला

यूएसए के श्री सुधीर साहनी का बहुत बहुत धन्यवाद जिन्होंने उदारतापूर्वक दान देकर १५ पुराने कम्प्यूटरों को १८ नये कम्प्यूटरों से बदलने में सहायता की।

ऑनलाइन अंग्रेज़ी कार्यक्रम

अंग्रेज़ी भाषा की १० महीने की यह परियोजना, दिसम्बर में आठवीं कक्षा से २७ छात्रों, पाँचवीं कक्षा से ३० छात्राओं एवं ४ शिक्षकों द्वारा आरम्भ की गई। ब्रिटिश काउंसिल यूके से प्रेरित और स्टैनफोर्ड रिसर्च इंस्टीट्यूट से तकनीकी ज्ञान प्राप्त, इसे अवीवा के समर्थन से चलाया जा रहा है।

एस्सैल फाउंडेशन, अवीवा प्राईवेट लिमिडेट और केयरिंग हैन्ड्ज़ फॉर चिल्ड्रन का शिक्षा के कार्यक्रमों में समर्थन के लिए हार्दिक धन्यवाद!

We, at Arpana, depend on your support for our programs

Arpana Trust and Arpana Research & Charities Trust are both approved under Section 80G of the Income Tax Act, 1961, giving 50% tax relief for donors in India.
FCRA Registration No. for Arpana Trust is 172310001
FCRA Registration No. for Arpana Research & Charities Trust is 172310002

Send your contribution for dissemination of humane values & medical and community welfare services in

Delhi to: **Arpana Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132 037**

Send your contributions for health & development services in Haryana & Himachal to:
Arpana Research & Charities Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132 037
Arpana Hospital: 91-184-2380801, Info & Resources Office: 91-184-2390905
emails: at@arpana.org and arct@arpana.org
Please let us know by email or telephone, whenever you transfer funds to Arpana.

Mr. Harishwar Dayal, Executive Director of Arpana. Mobile: 9818600644

Mrs. Aruna Dayal, Director Development. Mobile 91-9873015108, 91-9034015109

Websites: **www.arpana.org** **www.arpanaservices.org**

प्रेरणादायक समाधि स्थल के निर्माण में भाग लेने के लिए सभी को एक निमंत्रण...

परम पूज्य माँ सभी के लिए एक करुणामयी माँ होने के साथ-साथ एक विश्वनीय मित्र भी रहीं। एक श्रद्धेय गुरु... जिनकी शरण में जो कोई भी आया, उसे वह परम शान्ति एवं आनन्द की ओर अग्रसर करते रहे। सभी को आत्म स्वरूप मानते हुए, वह सब के तद्रूप हो कर उनकी आत्मिक जिज्ञासा को समझ लेते थे। उनके पास आकर सभी सुरक्षा की भावना एवं परम शान्ति का अनुभव करते थे। गीता में ठीक ही कहा है कि ऐसे लोग दूसरे की आवश्यकता एवं उसके भाव के अनुसार ही देते हैं - '**ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्।**

मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।।' ४/११

उन्होंने उदारतापूर्वक अपना आप हर स्तर पर सभी को दिया... वह आज भी जिज्ञासुओं को निरन्तर शक्ति एवं मार्गदर्शन प्रदान करती हैं।

परम पूज्य माँ सदैव सत्य में स्थापित रहे। व्यावहारिक स्तर पर यह सत्य सभी के प्रति अथाह प्रेम के रूप में प्रवाहित हुआ। 'Love All' (सभी के प्रति प्रेम) उनका वास्तविक जीवन एवं शाश्वत संदेश है। अपने जीवन में सभी धर्मों के शास्त्रों में दिये गये मूल्यों को व्यावहारिक स्तर पर जीते हुए, उन्होंने न केवल शब्दों से, बल्कि अपने कर्मों राही सभी प्राणियों का एकत्व दर्शाया। उनकी उपस्थिति में सभी देशों एवं धर्मों के लोग आनन्दपूर्वक शान्ति के साथ इकट्ठे रहते थे।

आप सब की सहायता से, हम पूज्य माँ के लिए एक समाधि स्थान का निर्माण कर रहे हैं - प्रत्येक प्राणी के लिए वह एक दिव्य माँ हैं, जहाँ पर जीवन का वही ज्ञान सन्निहित है... वही शान्ति एवं आनन्द जो उन्होंने जीया। एक ऐसा स्थान - जहाँ सभी उनके द्वारा सिखाये गये मूल्यों एवं ज्ञान के पोषण के लिए एकत्रित होंगे और आनन्द प्राप्त कर सकेंगे।

ख़ूबसूरत प्राकृतिक वातवरण के बीच उनके पवित्र स्मृतिचिन्ह रखने के लिए इस स्थान पर एक छोटे से मन्दिर का निर्माण करने की योजना है - जहाँ सभी धर्मों के लोगों को प्रेरणा एवं शान्ति मिल सकेगी। उनके जीवन की दिव्यता एवं सुन्दरता, जो थी और जो सदैव रहेगी, को हम इस स्थान में उतार पाने का भरसक प्रयास करेंगे।

यह निमंत्रण उन सभी के लिए है जो परम पूज्य माँ को जानते हैं, जिन्होंने उनके विषय में सुना है, एवं जिन्होंने उनकी दिव्यता और मानवीय मूल्यों को सँजोया है। इस पवित्र स्थान के निर्माण में भाग लेने के लिए आप सभी आमंत्रित हैं। हम प्रेम से अर्पित की जा रही इस पावन आहुति में आप सभी की भागीदारी का स्वागत करेंगे।

हम पहले से ही इस अति विशेष परियोजना के लिए ३ एकड़ आरक्षित भूमि पर परिदृश्य का कार्य आरम्भ कर चुके हैं। मन्दिर की छत और गुंबद भी बन चुके हैं। हम शनैः शनैः आप के द्वारा प्रेम और भक्ति से दिये गये धन से इसका निर्माण कर रहे हैं।

सामने के पृष्ठ पर इस निर्माणाधीन समाधि मन्दिर की तस्वीर दी जा रही है। हम आप सभी से इस परियोजना में उदारतापूर्वक धन देने का आग्राह करते हैं जिससे कि इस प्रेरणादायक योजना को पूरा किया जा सके।